अक्तूबर 2023

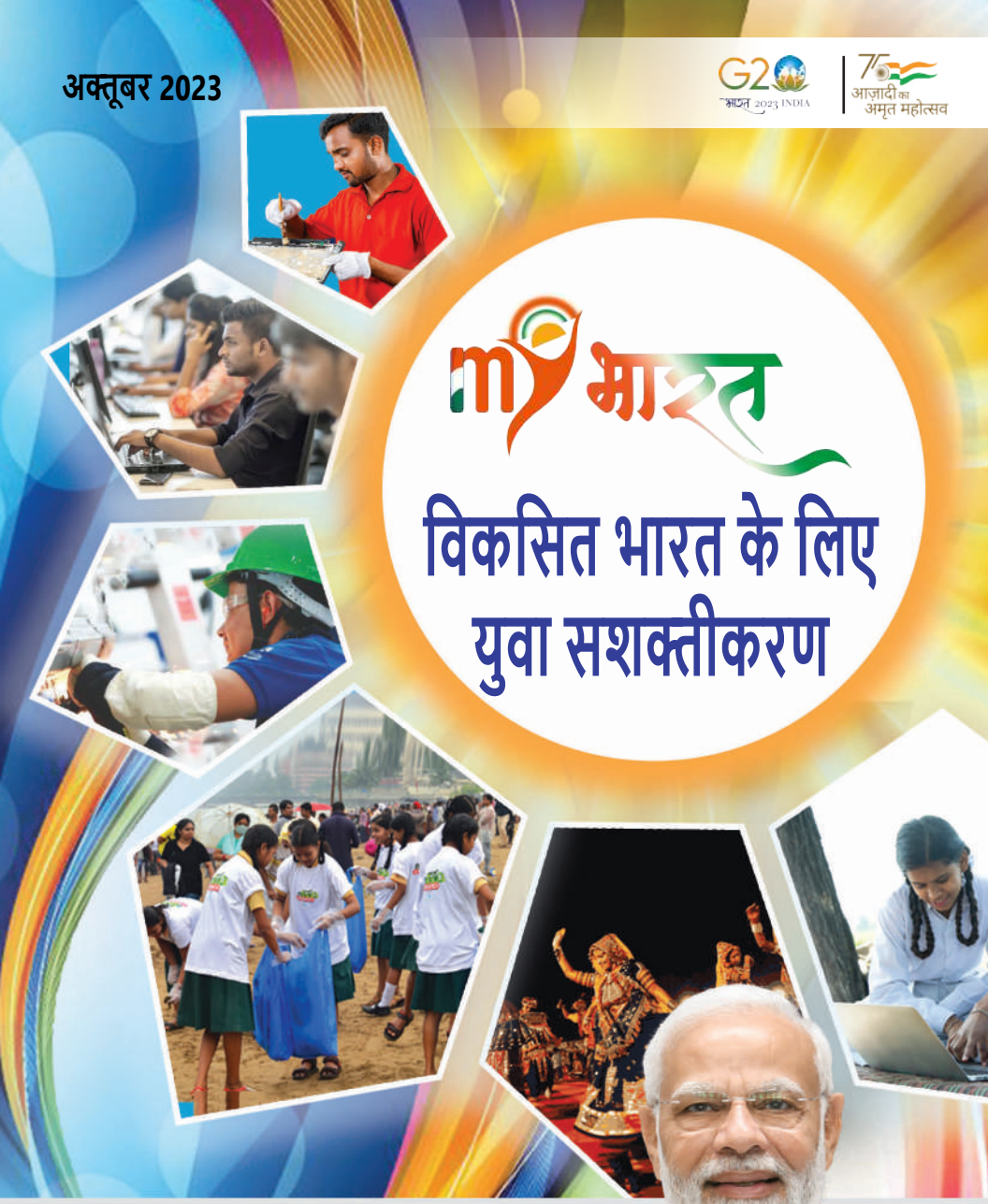

विकसित भारत के लिए युवा सशक्तीकरण

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 मुख्य आलेख

2.1 **वोकल फ़ॉर लोकल :** आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न साकार करते हुए 14

2.2 **मेरा युवा भारत :** सपने, विश्वास और उपलब्धि 30

03 संक्षेप में

3.1 **अमृत कलश यात्रा :** अज्ञात महानायकों को श्रद्धांजलि 24

3.2 **विविधता में एकता :** एक भारत, श्रेष्ठ भारत में साहित्य की भूमिका 38

3.3 **भारत के प्रतिष्ठित जनजातीय व्यक्तित्व :** प्रेरक जीवन और विरासतें 40

3.4 **बाधाओं को तोड़ती भारतीय खेल प्रतिभा** 46

3.5 **कूड़े का ख़ज़ाने में परिवर्तन** 52

3.7 **विविधता में एकता का जश्न :** राष्ट्रीय एकता दिवस 56

04 लेख व साक्षात्कार

4.1 वोकल फ़ॉर लोकल भारत की पुनर्खोज : **हिंडोल सेनगुप्ता** 18

4.2 वोकल फ़ॉर लोकल : भारत के हथकरघा और लक्ज़री फैशन परिदृश्य का पुनर्जीवन : **सुकेत धीर** 20

4.3 वोकल फ़ॉर लोकल : भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए दूरदर्शी पहल : **श्रुति संचेती** 22

4.4 समग्र युवा सशक्तीकरण के माध्यम से भारत के भविष्य को आकार देगा 'मेरा युवा भारत' : **अनुराग सिंह ठाकुर** 34

05 प्रतिक्रियाएँ 59

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे परिवारजनो, नमस्कार।

'मन की बात' में आपका एक बार फिर स्वागत है। ये एपिसोड ऐसे समय में हो रहा है, जब पूरे देश में त्योहारों की उमंग है। आप सभी को आने वाले सभी त्योहारों की बहुत-बहुत बधाइयाँ।

साथियो, त्योहारों की इस उमंग के बीच, दिल्ली की एक ख़बर से ही मैं 'मन की बात' की शुरुआत करना चाहता हूँ। इस महीने की शुरुआत में गाँधी जयंती के अवसर पर दिल्ली में खादी की रिकॉर्ड बिक्री हुई। यहाँ कनॉट प्लेस में एक ही खादी स्टोर में, एक ही दिन में, डेढ़ करोड़ रुपये से ज़्यादा का सामान लोगों ने खरीदा। इस महीने चल रहे खादी महोत्सव ने एक बार फिर बिक्री के अपने सारे पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। आपको एक और बात जानकर भी बहुत अच्छा लगेगा, दस साल पहले देश में जहाँ खादी प्रोडक्ट्स की बिक्री बड़ी मुश्किल से 30 हज़ार करोड़ रुपये से भी कम की थी, अब ये बढ़कर सवा लाख करोड़ रुपये के आस-पास पहुँच रही है। खादी की बिक्री बढ़ने का मतलब है; इसका फायदा शहर से लेकर गाँव तक में अलग-अलग वर्गों तक पहुँचता है। इस बिक्री का लाभ हमारे बुनकर, हस्तशिल्प के कारीगर, हमारे किसान, आयुर्वेदिक पौधे लगाने वाले, कुटीर उद्योग, सबको लाभ मिल रहा है और यही तो 'वोकल फ़ॉर लोकल' अभियान की ताकत है और धीरे-धीरे आप सब देशवासियों का समर्थन भी बढ़ता जा रहा है।

साथियो, आज मैं अपना एक और आग्रह आपके सामने दोहराना चाहता हूँ और बहुत ही आग्रहपूर्वक दोहराना चाहता हूँ। जब भी आप पर्यटन पर जाएँ, तीर्थाटन पर जाएँ, तो वहाँ के स्थानीय कलाकारों के द्वारा बनाए गए उत्पादों को ज़रूर खरीदें। आप अपनी उस यात्रा के कुल बजट में स्थानीय उत्पादों की खरीदी को एक महत्त्वपूर्ण प्राथमिकता के रूप में ज़रूर रखें। 10 परसेंट हो, 20 परसेंट हो, जितना आपका बजट बैठता हो, लोकल पर ज़रूर खर्च करिएगा और वहीं पर खर्च कीजिएगा।

साथियो, हर बार की तरह इस बार भी हमारे त्योहारों में हमारी प्राथमिकता हो 'वोकल फ़ॉर लोकल' और हम मिलकर उस सपने को पूरा करें, हमारा सपना है 'आत्मनिर्भर भारत'। इस बार ऐसे प्रोडक्ट से ही घर को रोशन करें, जिसमें मेरे किसी देशवासी के पसीने की महक हो, मेरे देश के किसी युवा का टैलेंट हो, उसके बनने में मेरे देशवासियों को रोज़गार मिला हो, रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की कोई भी आवश्यकता हो, हम लोकल ही लेंगे, लेकिन आपको एक और बात पर गौर करना होगा। 'वोकल फ़ॉर लोकल' की ये भावना सिर्फ त्योहारों की खरीदारी तक के लिए ही सीमित नहीं है और कहीं तो मैंने देखा है, दीवाली का दीया लेते हैं और फिर सोशल मीडिया पर डालते हैं 'वोकल फ़ॉर लोकल' – नहीं जी, वो तो शुरुआत है। हमें बहुत आगे बढ़ना है, जीवन की हर आवश्यकता–हमारे देश में अब सब कुछ उपलब्ध है। ये विज़न केवल छोटे दुकानदारों और रेहड़ी-पटरी से सामान लेने तक सीमित नहीं है। **आज भारत, दुनिया का बड़ा मैन्युफैक्चरिंग हब बन रहा है। कई बड़े ब्रांड यहीं पर अपने प्रोडक्ट को तैयार कर रहे हैं। अगर हम उन प्रोडक्ट को अपनाते हैं, तो मेक इन इंडिया को बढ़ावा मिलता है और ये भी 'लोकल के लिए वोकल' ही होना होता है और हाँ, ऐसे प्रोडक्ट को खरीदते समय हमारे देश की शान UPI डिजिटल पेमेंट सिस्टम से पेमेंट करने के आग्रही बनें, जीवन में आदत डालें और उस प्रोडक्ट के साथ या उस कारीगर के साथ सेल्फी नमो ऐप पर मेरे साथ शेयर करें और वो भी मेड इन इंडिया स्मार्ट फ़ोन से। मैं उनमें से कुछ पोस्ट को सोशल मीडिया पर शेयर करूँगा ताकि दूसरे लोगों को भी 'वोकल फ़ॉर लोकल' की प्रेरणा मिले।**

साथियो, जब आप भारत में बने, भारतीयों द्वारा बनाए गए उत्पादों से अपनी दीवाली रोशन करेंगे, अपने परिवार की हर छोटी-मोटी आवश्यकता लोकल से पूरी करेंगे तो दीवाली की जगमगाहट और ज़्यादा बढ़ेगी ही बढ़ेगी, लेकिन उन कारीगरों की ज़िंदगी में एक नई दीवाली आएगी, जीवन की एक नई सुबह आएगी, उनका जीवन शानदार बनेगा। भारत को आत्मनिर्भर बनाइए, 'मेक इन इंडिया' ही चुनते जाइए, जिससे आपके साथ-साथ और भी करोड़ों देशवासियों की दीवाली शानदार बने, जानदार बने, रोशन बने, दिलचस्प बने।

मेरे प्यारे देशवासियो, 31 अक्तूबर का दिन हम सभी के लिए बहुत विशेष होता है। इस दिन हमारे लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्म-जयंती मनाते हैं। हम भारतवासी, उन्हें कई वजहों से याद करते हैं और श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। सबसे बड़ी वजह है – देश की 580 से ज़्यादा रियासतों को जोड़ने में उनकी अतुलनीय भूमिका। हम जानते हैं हर साल 31 अक्तूबर को गुजरात में स्टेचू ऑफ़ यूनिटी पर एकता दिवस से जुड़ा मुख्य समारोह होता है। इस बार इसके अलावा दिल्ली में कर्तव्य पथ पर एक बहुत ही विशेष कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। आपको याद होगा, मैंने पिछले दिनों देश के हर गाँव से, हर घर से मिट्टी संग्रह करने का आग्रह किया था। हर घर से मिट्टी संग्रह करने के बाद उसे कलश में रखा गया और फिर अमृत कलश यात्राएँ निकाली गईं। देश के कोने-कोने से एकत्रित की गई ये माटी, यह हज़ारों अमृत कलश यात्राएँ अब दिल्ली पहुँच रही हैं। यहाँ दिल्ली में उस मिट्टी को एक विशाल भारत कलश में डाला जाएगा और इसी पवित्र मिट्टी से दिल्ली में 'अमृत वाटिका' का निर्माण होगा। यह देश की राजधानी के हृदय में अमृत महोत्सव की भव्य विरासत के

रूप में मौजूद रहेगी। **31 अक्तूबर को ही देशभर में पिछले ढाई साल से चल रहे आज़ादी के अमृत महोत्सव का समापन होगा। आप सभी ने मिलकर इसे दुनिया में सबसे लम्बे समय तक चलने वाले महोत्सव में से एक बना दिया। अपने सेनानियों का सम्मान हो या फिर हर घर तिरंगा, आज़ादी के अमृत महोत्सव में, लोगों ने अपने स्थानीय इतिहास को एक नई पहचान दी है। इस दौरान सामुदायिक सेवा की भी अद्भुत मिसाल देखने को मिली है।**

साथियो, मैं आज आपको एक और खुशखबरी सुना रहा हूँ, विशेषकर मेरे नौजवान बेटे-बेटियों को, जिनके दिलों में देश के लिए कुछ करने का जज़्बा है, सपने हैं, संकल्प हैं। ये खुशखबरी देशवासियों के लिए तो है ही है, मेरे नौजवान साथियो आपके लिए विशेष है। दो दिन बाद ही 31 अक्तूबर को एक बहुत बड़े राष्ट्रव्यापी संगठन की नींव रखी जा रही है और वो भी सरदार साहब की जन्म-जयंती के दिन। इस संगठन का नाम है– मेरा युवा भारत, यानी MYBharat. MYBharat संगठन, भारत के युवाओं को राष्ट्रनिर्माण के विभिन्न आयोजनों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देगा। ये विकसित भारत के निर्माण में भारत की युवा शक्ति को एकजुट करने का एक अनोखा प्रयास है। **मेरा युवा भारत की वेबसाइट MYBharat भी शुरू होने वाली है। मैं युवाओं से आग्रह करूँगा, बार-बार आग्रह करूँगा कि आप सभी मेरे देश के नौजवान, आप सभी मेरे देश के बेटे-बेटी MYBharat.Gov.in पर रजिस्टर करें और विभिन्न कार्यक्रम के लिए साइनअप करें। 31 अक्तूबर को पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जी की पुण्यतिथि भी है। मैं उन्हें भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।**

मेरे परिवारजनो, हमारा साहित्य, लिटरेचर, एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को प्रगाढ़ करने के सबसे बेहतरीन माध्यमों में से एक है। मैं आपके साथ तमिलनाडु की गौरवशाली विरासत से जुड़े दो बहुत ही प्रेरक प्रयासों को साझा करना चाहता हूँ। मुझे तमिल

प्रतिभा का पोषण, भाग्य का निर्माण

शिवशंकरी

ए. के. पेरूमल

की प्रसिद्ध लेखिका बहन शिवशंकरी जी के बारे में जानने का अवसर मिला है। उन्होंने एक प्रोजेक्ट किया है – निट इंडिया, थ्रू लिटरेचर। इसका मतलब है – साहित्य से देश को एक धागे में पिरोना और जोड़ना। वे इस प्रोजेक्ट पर बीते 16 सालों से काम कर रही हैं। इस प्रोजेक्ट के ज़रिए उन्होंने 18 भारतीय भाषाओं में लिखे साहित्य का अनुवाद किया है। उन्होंने कई बार कन्याकुमारी से कश्मीर तक और इम्फाल से जैसलमेर तक देशभर में यात्राएँ कीं, ताकि अलग-अलग राज्यों के लेखकों और कवियों के इंटरव्यू कर सकें। शिवशंकरी जी ने अलग-अलग जगहों पर अपनी यात्रा की, ट्रेवल कमेंटरी के साथ उन्हें पब्लिश किया है। यह तमिल और अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में है। इस प्रोजेक्ट में चार बड़े वॉल्यूम्स हैं और हर वॉल्यूम भारत के अलग-अलग हिस्से को समर्पित है। मुझे उनकी इस संकल्प शक्ति पर गर्व है।

साथियो, कन्याकुमारी के थिरु ए. के. पेरूमल जी का काम भी बहुत प्रेरित करने वाला है। उन्होंने तमिलनाडु के ये जो स्टोरी टैलिंग ट्रेडिशन है, उसको संरक्षित करने का सराहनीय काम किया है। वे अपने इस मिशन में पिछले 40 सालों से जुटे हैं। इसके लिए वे तमिलनाडु के अलग-अलग हिस्सों में ट्रेवल करते हैं और फोक आर्ट फॉर्म्स को खोज कर उसे अपनी बुक का हिस्सा बनाते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि उन्होंने अब तक ऐसी करीब 100 किताबें लिख डाली हैं। इसके अलावा पेरूमल जी का एक और भी पैशन है।

तमिलनाडु के टेम्पल कल्चर के बारे में रिसर्च करना उन्हें बहुत पसंद है। उन्होंने लैदर पपिट्स पर भी काफी रिसर्च की है, जिसका लाभ वहाँ के स्थानीय लोक कलाकारों को हो रहा है। **शिवशंकरी जी और ए. के. पेरूमल जी के प्रयास हर किसी के लिए एक मिसाल हैं। भारत को अपनी संस्कृति को सुरक्षित करने वाले ऐसे हर प्रयास पर गर्व है, जो हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूती देने के साथ ही देश का नाम, देश का मान, सब कुछ बढ़ाए।**

मेरे परिवारजनो, आने वाले 15 नवम्बर को पूरा देश जनजातीय गौरव दिवस मनाएगा। यह विशेष दिन भगवान बिरसा मुंडा की जन्म-जयंती से जुड़ा है। भगवान बिरसा मुंडा हम सब के हृदय में बसे हैं। सच्चा साहस क्या है और अपनी संकल्प शक्ति पर अडिग रहना किसे कहते हैं, ये हम उनके जीवन से सीख सकते हैं। उन्होंने विदेशी शासन को कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने ऐसे समाज की परिकल्पना की थी, जहाँ अन्याय के लिए कोई जगह नहीं थी। वे चाहते थे कि हर व्यक्ति को सम्मान और समानता का जीवन मिले। **भगवान बिरसा मुंडा ने प्रकृति के साथ सद्भाव से रहना, इस पर भी हमेशा जोर दिया। आज भी हम देख सकते हैं कि हमारे आदिवासी भाई-बहन प्रकृति की देखभाल और उसके संरक्षण के लिए हर तरह से समर्पित हैं। हम सब के लिए, हमारे आदिवासी भाई-बहनों का ये काम बहुत बड़ी प्रेरणा है।**

साथियो, कल यानी 30 अक्तूबर को गोविन्द गुरु जी की पुण्यतिथि भी है। हमारे गुजरात और राजस्थान के आदिवासी और वंचित समुदायों के जीवन में गोविन्द गुरु

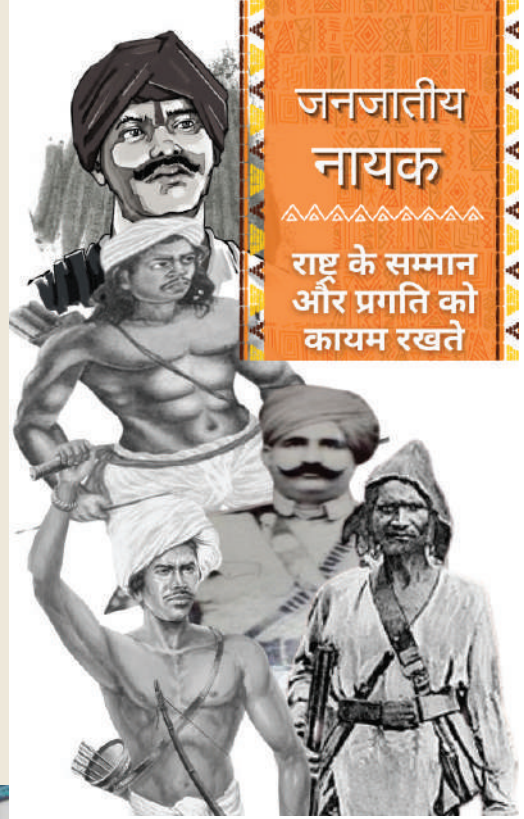

जी का बहुत विशेष महत्त्व रहा है। **गोविन्द गुरु जी को भी मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। नवम्बर महीने में हम मानगढ़ नरसंहार की बरसी भी मनाते हैं। मैं उस नरसंहार में शहीद माँ भारती की सभी संतानों को नमन करता हूँ।**

साथियो, भारतवर्ष में आदिवासी योद्धाओं का समृद्ध इतिहास रहा है। इसी भारत-भूमि पर महान तिलका माँझी ने अन्याय के खिलाफ बिगुल फूँका था। इसी धरती से सिदो-कान्हू ने समानता की आवाज़ उठाई। हमें गर्व है कि जन-योद्धा टंटिया भील ने हमारी धरती पर जन्म लिया। हम शहीद वीर नारायण सिंह को पूरी श्रद्धा के साथ याद करते हैं, जो कठिन परिस्थितियों में अपने लोगों के साथ खड़े रहे। वीर रामजी गोंड हों, वीर गुंडाधुर हों, भीमा नायक हों, उनका साहस आज भी हमें प्रेरित करता है। अल्लूरी सीताराम राजू ने आदिवासी भाई-बहनों में जो अलख जगाई, उसे देश आज भी याद करता है। नार्थ ईस्ट में कियांग नोबांग और रानी गाइदिन्ल्यू जैसे स्वतंत्रता सेनानियों से भी हमें काफी प्रेरणा मिलती है। आदिवासी समाज से ही देश को राजमोहिनी देवी और रानी कमलापति जैसी वीरांगनाएँ मिलीं। देश इस समय आदिवासी समाज को प्रेरणा देने वाली रानी दुर्गावती जी की 500वीं जयंती मना रहा है। मैं आशा करता हूँ कि देश के अधिक से अधिक युवा अपने क्षेत्र की आदिवासी विभूतियों के बारे में जानेंगे और उनसे प्रेरणा लेंगे। देश अपने आदिवासी समाज का कृतज्ञ है, जिन्होंने राष्ट्र के स्वाभिमान और उत्थान को हमेशा सर्वोपरि रखा है।

मेरे प्यारे देशवासियों, त्योहारों के इस मौसम में, इस समय देश में स्पोर्ट्स का भी परचम लहरा रहा है। पिछले दिनों एशिया गेम्स के बाद पैरा एशियन गेम्स में भी भारतीय खिलाड़ियों ने जबरदस्त कामयाबी हासिल की है। इन खेलों में भारत ने 111 मेडल जीतकर एक नया इतिहास रच दिया है। मैं पैरा एशियाई गेम्स में हिस्सा लेने वाले सभी एथलीट्स को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

साथियो, मैं आपका ध्यान स्पेशल ओलम्पिक्स वर्ल्ड समर गेम्स की ओर भी ले जाना चाहता हूँ। इसका आयोजन

बर्लिन में हुआ था। ये प्रतियोगिता हमारे इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी वाले एथलीटों की अद्भुत क्षमता को सामने लाती है। इस प्रतियोगिता में भारतीय दल ने 75 गोल्ड मेडल्स सहित 200 पदक जीते। रोलर स्केटिंग हो, बीच वॉलीबॉल हो, फुटबॉल हो या टेनिस, भारतीय खिलाड़ियों ने मेडल्स की झड़ी लगा दी। इन पदक विजेताओं की लाइफ जर्नी काफ़ी इन्स्पायरिंग रही है। हरियाणा के रणवीर सैनी ने गोल्फ में गोल्ड मैडल जीता है। बचपन से ही ऑटिज्म से जूझ रहे रणवीर के लिए कोई भी चुनौती गोल्फ को लेकर उनके जुनून को कम नहीं कर पाई। उनकी माँ तो यहाँ तक कहती हैं कि रविन्द्र की वजह से ही परिवार में आज सब गोल्फर बन गए हैं। पुडुचेरी के

16 साल के टी-विशाल ने चार मैडल जीते। गोवा की सिया सरोदे ने पॉवरलिफ्टिंग में 2 गोल्ड मेडल्स सहित चार पदक अपने नाम किए। 9 साल की उम्र में अपनी माँ को खोने के बाद भी उन्होंने खुद को निराश नहीं होने दिया। छत्तीसगढ़ के दुर्ग के रहने वाले अनुराग प्रसाद ने पॉवरलिफ्टिंग में तीन गोल्ड और एक सिल्वर मैडल जीता है। ऐसी ही प्रेरक गाथा झारखंड के इंदु प्रकाश की है, जिन्होंने साइक्लिंग में दो मैडल जीते हैं। बहुत ही साधारण परिवार से आने के बावजूद इंदु ने ग़रीबी को कभी अपनी सफलता के सामने दीवार नहीं बनने दिया। **मुझे विश्वास है कि इन खेलों में भारतीय खिलाड़ियों की सफलता इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी का मुकाबला कर रहे अन्य बच्चों और परिवारों को भी प्रेरित करेगी। मेरी आप सब से भी प्रार्थना है, आपके गाँव में, आपके गाँव के अगल-बगल में, ऐसे बच्चे, जिन्होंने इस खेलकूद में हिस्सा लिया है या विजयी हुए हैं, आप सपरिवार उनके साथ जाइए। उनको बधाई दीजिए और कुछ पल उन बच्चों के साथ बिताइए। आपको एक नया ही अनुभव होगा। परमात्मा ने उनके अन्दर**

अपव्यय का ख़ज़ाने में परिवर्तन

सतत भारत की आधारशिला

एक ऐसी शक्ति भरी है। आपको भी उसके दर्शन का मौका मिलेगा। ज़रूर जाइएगा।

मेरे परिवारजनो, आप सभी ने गुजरात के तीर्थक्षेत्र अम्बाजी मंदिर के बारे में तो अवश्य ही सुना होगा। यह एक महत्त्वपूर्ण शक्तिपीठ है, जहाँ देश-विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु माँ अम्बे के दर्शन के लिए पहुँचते हैं। यहाँ गब्बर पर्वत के रास्ते में आपको विभिन्न प्रकार की योग मुद्राओं और आसनों की प्रतिमाएँ दिखाई देंगी। क्या आप जानते हैं कि इन प्रतिमाओं की खास क्या बात है? दरअसल ये स्क्रैप से बने स्कल्पचर हैं, एक प्रकार से कबाड़ से बने हुए और जो बेहद अद्भुत हैं, यानी ये प्रतिमाएँ इस्तेमाल हो चुकी, कबाड़ में फेंक दी गई पुरानी चीज़ों से बनाई गई हैं। अम्बाजी शक्ति पीठ पर देवी माँ के दर्शन के साथ-साथ ये प्रतिमाएँ भी श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बन गई हैं। इस प्रयास की सफलता को देखकर मेरे मन में एक सुझाव भी आ रहा है। **हमारे देश में बहुत सारे ऐसे लोग हैं, जो वेस्ट से इस तरह की कलाकृतियाँ बना सकते हैं, तो मेरा गुजरात सरकार से आग्रह है कि वो एक प्रतियोगिता शुरू करे और ऐसे लोगों को आमंत्रित करे। ये प्रयास, गब्बर पर्वत का आकर्षण बढ़ाने के साथ ही पूरे देश में 'वेस्ट टू वैल्थ' अभियान के लिए लोगों को प्रेरित करेगा।**

साथियो, जब भी स्वच्छ भारत और 'वेस्ट टू वेल्थ' की बात आती है, तो हमें देश के कोने-कोने से अनगिनत उदाहरण देखने को मिलते हैं। असम के कामरूप मेट्रोपोलिटन डिस्ट्रिक्ट

में 'अक्षर फोरम' इस नाम का एक स्कूल बच्चों में सस्टेनेबल डेवलपमेंट की भावना भरने का, संस्कार का, एक निरंतर काम कर रहा है। यहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी हर हफ़्ते प्लास्टिक वेस्ट जमा करते हैं, जिसका उपयोग ईको-फ्रेंडली ईंटें और चाबी की चेन जैसे सामान बनाने में होता है। यहाँ स्टूडेंट्स को रीसाइक्लिंग और प्लास्टिक वेस्ट से प्रोडक्ट्स बनाना भी सिखाया जाता है। कम आयु में ही पर्यावरण के प्रति ये जागरूकता इन बच्चों को देश का एक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाने में बहुत मदद करेगी।

मेरे परिवारजनो, आज जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जहाँ हमें नारी शक्ति का सामर्थ्य देखने को नहीं मिल रहा हो। इस दौर में, जब हर तरफ उनकी उपलब्धियों को सराहा जा रहा है, तो हमें भक्ति की शक्ति को दिखाने वाली एक ऐसी महिला संत को भी याद रखना है, जिसका नाम इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज है। देश इस वर्ष महान संत मीराबाई की 525वीं जन्म-जयंती मना रहा है। वो देशभर के लोगों के लिए कई वजहों से एक प्रेरणाशक्ति रही हैं। अगर किसी की संगीत में रुचि हो, तो वो संगीत के प्रति समर्पण का बड़ा उदाहरण ही हैं, अगर कोई कविताओं का प्रेमी हो, तो भक्तिरस में डूबे मीराबाई के भजन उसे अलग ही आनन्द देते हैं, अगर कोई दैवीय शक्ति में विश्वास रखता हो, तो मीराबाई का श्रीकृष्ण में लीन हो जाना उसके लिए एक बड़ी प्रेरणा बन सकता है। मीराबाई, संत रविदास को अपना गुरु मानती थीं। वो कहती भी थीं–

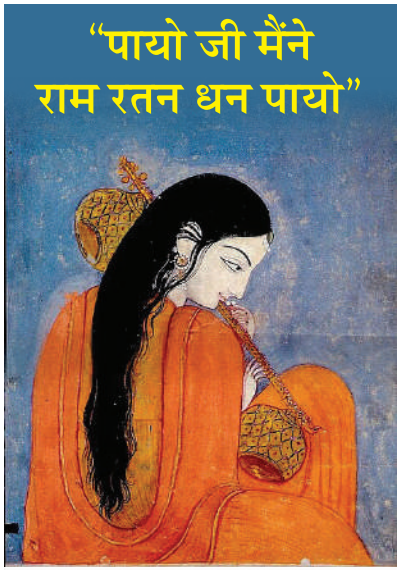

मीराबाई की 525वीं जन्म-जयंती

गुरु मिलिया रैदास, दीन्हीं ज्ञान की गुटकी।

देश की माताओं-बहनों और बेटियों के लिए मीराबाई आज भी प्रेरणापुंज हैं। उस कालखंड में भी उन्होंने अपने भीतर की आवाज़ को ही सुना और रूढ़िवादी धारणाओं के ख़िलाफ़ खड़ी हुईं। एक संत के रूप में भी वे हम सबको प्रेरित करती हैं। वे भारतीय समाज और संस्कृति को तब सशक्त करने के लिए आगे आईं, जब देश कई प्रकार के हमले झेल रहा था। सरलता और सादगी में कितनी शक्ति होती है, ये हमें मीराबाई के जीवनकाल से पता चलता है। मैं संत मीराबाई को नमन करता हूँ।

मेरे प्यारे परिवारजनो, इस बार 'मन की बात' में इतना ही। आप सबके साथ होने वाला हर संवाद मुझे नई ऊर्जा से भर देता है। आपके सन्देशों में उम्मीद और पॉजिटिविटी से जुड़ी सैकड़ों गाथाएँ मुझ तक पहुँचती रहती हैं। मेरा फिर से आपसे आग्रह है– आत्मनिर्भर भारत अभियान पर बल दें। स्थानीय उत्पाद खरीदें, लोकल के लिए वोकल बनें। जैसे आप अपने घरों को स्वच्छ रखते हैं, वैसे ही अपने मोहल्ले और शहर को स्वच्छ रखें और आपको पता है, 31 अक्तूबर सरदार साहब की जयंती, देश एकता के दिवस के रूप में मनाता है, देश के अनेक स्थानों पर 'रन फ़ॉर यूनिटी' के कार्यक्रम होते हैं, आप भी **31 अक्तूबर को 'रन फ़ॉर यूनिटी' के कार्यक्रम को आयोजित करें। बहुत बड़ी मात्रा में आप भी जुड़ें, एकता के संकल्प को मजबूत करें।** एक बार फिर मैं आने वाले त्योहारों के लिए अनेक-अनेक शुभकामनाएँ देता हूँ। आप सभी परिवार समेत खुशियाँ मनाएँ, स्वस्थ रहें, आनन्द में रहें, यही मेरी कामना है और हाँ! दीवाली के समय कहीं ऐसी गलती न हो जाए कि कहीं आग की कोई घटनाएँ हो जाएँ। किसी के जीवन को ख़तरा हो जाए तो आप ज़रूर सम्भालिए, खुद को भी सम्भालिए और पूरे क्षेत्र को भी सम्भालिए। बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

वोकल फ़ॉर लोकल

आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न साकार करते हुए

“हमारे दैनिक जीवन की आवश्यकताएँ जो भी हों, हम स्थानीय ही खरीदेंगे। स्थानीय उत्पादों की बिक्री से हमारे बुनकर, हस्तशिल्प कारीगर, हमारे किसान, आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों की खेती में लगे कुटीर उद्योग, सभी को लाभ मिल रहा है... और यही ‘वोकल फ़ॉर लोकल’ अभियान की ताक़त है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

भारत की स्वदेशी कलाएँ और शिल्प, देश की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता की जीती-जागती मिसाल हैं। स्थानीय कारीगर और शिल्पकार दशकों से हमारी संस्कृति, रीति-रिवाज़ और परम्पराओं को अपनी अनूठी महारत के बल पर सहेजते आ रहे हैं और सीमित संसाधनों के बावजूद इन्हें जीवित रखे हुए हैं। उन्हें उचित मान्यता देने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ‘वोकल फ़ॉर लोकल’ आन्दोलन का आग़ाज़ किया। यह आन्दोलन स्थानीय उत्पादों और व्यवसायों को सहयोग कर, स्थानीय विनिर्माण समुदायों की क्षमता का उपयोग करके इनके आर्थिक उत्थान का आह्वान करता है।

अपने ‘मन की बात’ कार्यक्रम के नवीनतम अंक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ‘वोकल फ़ॉर लोकल’ के महत्त्व पर बल दिया। उनका यह सन्देश, भारत के नागरिकों के बीच विभिन्न सन्देशों के रूप में पहुँचा है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के उनके गम्भीर दृष्टिकोण में, ‘वोकल फ़ॉर लोकल’ का आदर्श वाक्य महत्त्वपूर्ण है और इसे सशक्तीकरण का द्वार कहा जा सकता है।

भारतीयों के बीच बड़े पैमाने पर उत्साह जगाने वाले ‘वोकल फ़ॉर लोकल’ आन्दोलन ने खादी में नए सिरे से रुचि जगाई है। आज़ादी का सफ़र शुरू करने वाले स्वतंत्रता संग्राम की प्रतीक रही खादी ने भारत को स्वायत्त बनाने और राष्ट्र-निर्माण के हर क्षेत्र में इसकी क्षमता बढ़ाने की खोज को निरन्तर आगे बढ़ाया।

लोगों की मानसिकता में आमूलचूल परिवर्तन लाने के बाद खादी ने आज कपड़ा बाज़ार में अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज़ कराने के लिए लम्बा सफर तय किया है। ‘खादी फ़ॉर नेशन, खादी फ़ॉर फ़ैशन’ के मंत्र के साथ प्रधानमंत्री ने 1 से 31 अक्तूबर, 2023 तक खादी महोत्सव अभियान की शुरुआत की, जो परिधान, होम फ़र्निशिंग के अलावा एक्सेसरी के रूप में खादी कपड़े के उपयोग को बढ़ावा देता है। जैसा प्रधानमंत्री ने अपने ‘मन की बात’ के नवीनतम अंक में बताया, अक्तूबर, 2023 में खादी के लिए दीवानगी अपने चरम पर पहुँच गई, जब नई दिल्ली के केवल एक खादी स्टोर में एक दिन में ही लगभग 1.5 करोड़ रुपये की बिक्री हुई।

‘वोकल फ़ॉर लोकल’ मिशन ‘मेक इन इंडिया’ पहल के माध्यम से विनिर्माण उद्योग में क्रान्ति लाने की प्रधानमंत्री की महत्त्वाकांक्षा को और आगे बढ़ाता है। यह पथ-प्रदर्शक पहल, भारत को एक विश्वसनीय वैश्विक डिज़ाइन और विनिर्माण गढ़ के रूप में प्रस्तुत करती है। आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की राह में यह उद्यम एक मील का पत्थर है, जो देश के निरन्तर बढ़ते विनिर्माण परिदृश्य में अपने को एक संसाधन के रूप में पेश करके अपनी अपरिहार्यता साबित करना चाहता है। इसमें प्रधानमंत्री के ‘मेक इन इंडिया’, ‘मेक फ़ॉर वर्ल्ड’ की अनुगूँज है, जो देश की विशिष्ट क्षमता में विदेशी निवेश आमन्त्रित करता है, नवाचार को प्रोत्साहित करता है और ऑटोमोबाइल, अक्षय ऊर्जा, रेलवे, पर्यटन, कपड़ा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकास बढ़ा कर, भारत को विश्व के लिए एक उपयोगी परिसम्पत्ति बनाता है। यह पहल भारत की वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदर्शित करती है।

“वोकल फ़ॉर लोकल कई मायनों में भारत की पुनर्खोज का सशक्त माध्यम बना है। भारतीय देश की पुनर्खोज कर रहे हैं कि हमारे देश की बनी वस्तुओं की विदेशों में कभी इतनी माँग और लोकप्रियता क्यों थी। अब भारतीयों की क्रय शक्ति मज़बूत होने से देश में बनी उत्कृष्ट वस्तुओं की एक बार फिर से दुनिया में ही नहीं, देश में भी उतनी ही माँग है।”

-हिंडोल सेनगुप्ता
अनुसंधान प्रमुख, इन्वेस्ट इंडिया

स्थानीय स्तर पर स्वदेशी उत्पादकों के सशक्तीकरण से ही आत्मनिर्भर भारत सम्भव है। इस अभियान को गति देते हुए सरकार ने स्थानीय विनिर्माण उद्योग के लिए महत्त्वपूर्ण उपाय किए हैं। इस दिशा में भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण द्वारा शुरू की गई योजना अवसर (एवीएसएआर) है, जो अपने हवाईअड्डों पर स्व-सहायता समूहों को उनके बनाए क्षेत्रीय वाणिज्यिक उत्पाद प्रदर्शित करने का अवसर देगी। ऐसी ही एक अन्य स्कीम जनजाति कल्याण मंत्रालय के तहत है– पूर्वोत्तर क्षेत्र के जनजातीय उत्पादों को बढ़ावा, यानी पीटीपी-एनईआर। इसमें जनजातीय कारीगरों और उनके बनाए उत्पादों को देश के पूर्वोत्तर क्षेत्रों से लाकर इम्पैनलमेंट मेलों के माध्यम से मुख्यधारा के बाज़ार में जगह दी जाएगी। वस्त्र मंत्रालय ने भी शिल्प के सामाजिक, सौन्दर्य, आर्थिक और संवर्धनात्मक पहलुओं का आकलन करने के लिए सर्वेक्षण और कार्यशालाएँ आयोजित करके, हस्तशिल्प क्षेत्रों के विकास की जानकारी कारीगरों को देने के लिए राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम तैयार किया है। इस तरह के उपाय एक मज़बूत कारीगर कार्यबल स्थापित करने की दिशा में भारत की प्रगति की ओर संकेत करते हैं।

'मेक इन इंडिया' उपक्रम ने विशिष्ट भुगतान पहचान (यूपीआई) के रूप में अपने डिजिटल भुगतान के बुनियादी ढाँचे के माध्यम से देश में बड़े पैमाने पर वित्तीय क्रान्ति की है। भारत, जो हमेशा नक़दी-आधारित अर्थव्यवस्था रही थी, उसने डिजिटल भुगतान का प्रवाह देखकर लेन-देन की विधि पूरी तरह से बदल डाली। एक सहज भुगतान उपकरण के रूप में UPI, एक क्लिक के साथ सुरक्षित और सहज लेन-देन सुनिश्चित करके भारत की बढ़ती इंटरनेट उपयोक्ता जनसंख्या के लिए वरदान साबित हुआ है। 30 करोड़ से अधिक उपयोक्ताओं को देखते हुए UPI भारतीय खुदरा और वाणिज्य का एक अनिवार्य पहलू बन गया है। धीरे-धीरे इस तंत्र को अपनाते हुए स्थानीय व्यवसायों को भुगतान की इस नई विधि से लाभ हुआ, क्योंकि इसमें तत्काल भुगतान

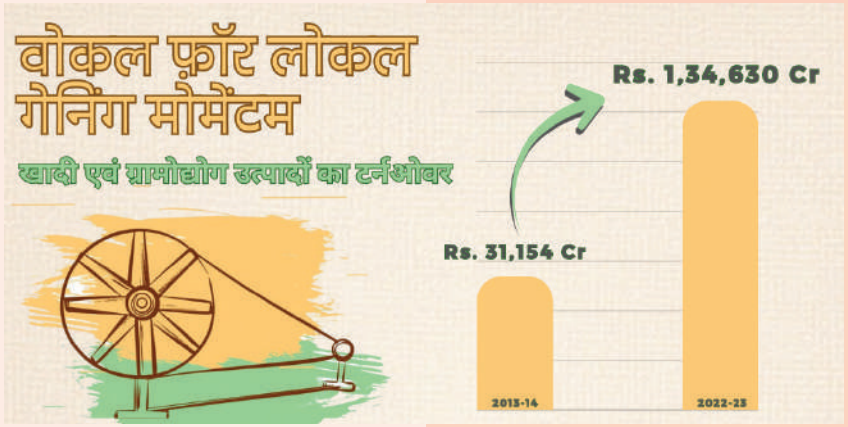

हस्तान्तरण के अलावा लेन-देन में पारदर्शिता और ग्राहकों की सुविधा भी शामिल है।

स्थानीय लोगों के लिए मुखर होने की आवश्यकता, राष्ट्रीय विकास के विभिन्न पहलुओं में गहरे तक निहित है। इन पहलुओं में से एक स्थानीय समुदायों का उत्थान है, जो भारतीय संस्कृति और कला की विभिन्न प्रथाओं को सुरक्षित और संरक्षित करते आ रहे हैं। परम्पराओं को जीवित रखने और समुदायों को वित्तीय रूप से समावेशी बनाने के इस प्रयास में स्थानीय उत्पादों को समर्थन देने की आवश्यकता अनिवार्य हो जाती है। 'वोकल फ़ॉर लोकल' आन्दोलन ने कारीगरों को व्यापार करने और अपनी कड़ी मेहनत का लाभ प्राप्त करने के प्रति जागरूक बनाने का प्रभावी तंत्र बना कर उनका उत्थान किया है।

आत्मनिर्भर भारत बनाने की प्रधानमंत्री की दृष्टि में, वोकल फ़ॉर लोकल अभियान केवल एक नारा मात्र नहीं है। जैसे-जैसे भारत सशक्तीकरण, समावेशिता और आर्थिक लचीलेपन की ओर अग्रसर हो रहा है, यह यात्रा राष्ट्र और इसके लोगों के लिए एक समृद्ध, आत्मनिर्भर भविष्य बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

वोकल फ़ॉर लोकल
भारत की पुनर्खोज

हिंडोल सेनगुप्ता
अनुसंधान प्रमुख, इन्वेस्ट इंडिया

रोमन इतिहासकार प्लिनी द ऐल्डर को प्रायः शिकायत थी कि उनके हमवतन रोमन नागरिक भारत की बनी वस्तुएँ, रत्न-जवाहर तथा मसाले बहुत पसन्द करते थे और वहाँ से इतनी मात्रा में ख़रीद कर लाते थे कि रोमन साम्राज्य का राजकोष ख़ाली हो रहा था और ये रोमन ख़रीदते क्या थे? उदाहरण के लिए, बंगाल का मलमल, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह धुँए की गन्ध-सा नाज़ुक और हल्का होता था।

लेकिन यह समृद्ध इतिहास और क्षमता, ब्रिटिश शासन के दौरान नष्ट कर दी गई। भारत का अनूठा बूटा डिज़ाइन, जो कश्मीर के कारीगर सदियों से बनाते आ रहे थे, वो फ़्रांस के सैनिकों के हाथों नेपोलियन की पत्नी जॉसेफ़ाइन तक पहुँचा और देखते-ही-देखते इंग्लिश चैनल के दोनों ओर अभिजात्य वर्ग के लिए फ़ैशन बन गया, तब ब्रिटिश और स्कॉटिश कपड़ा मिलों ने यही बूटा डिज़ाइन, जो वहाँ पैस्ले डिज़ाइन कहलाने लगा था, उसकी बड़े पैमाने पर कपड़े पर छपाई कर इतना आम कर दिया कि इसका कलात्मक सौन्दर्य और मूल्य, दोनों का अवमूल्यन हो गया।

भारत के ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो देश की सम्प्रभुता खोने के साथ ही गुम हो गए और इसके साथ ही वह कलात्मकता, वो उत्कृष्ट कारीगर और उनके हाथों बनी स्थानीय वस्तुएँ भी ग़ायब होने लगीं। प्राचीन और मध्यकालीन दुनिया में भारत उत्कृष्ट विलासपूर्ण वस्तुओं के निर्माण का केन्द्र रहा है और अब 'वोकल फ़ॉर लोकल' अभियान के माध्यम से भारतीय भारत में बनी स्थानीय वस्तुओं की क़द्र करने लगे हैं, उनकी कीमत समझने लगे हैं। देश की पिछले एक दशक में प्रति व्यक्ति आय दोगुना होने से अधिक-से-अधिक भारतीय अब उत्कृष्ट स्वदेशी कलात्मक उत्पाद खरीद सकते हैं और खरीद भी रहे हैं।

'वोकल फ़ॉर लोकल' की ताक़त

का अन्दाज़ा भारत से खिलौनों के निर्यात से लगाया जा सकता है। इस क्षेत्र ने 2021 में इस पर ध्यान केन्द्रित किया और भारत के खिलौना निर्यात में 150 प्रतिशत का उछाल आया, जबकि आयात ने 70 प्रतिशत गिरावट दर्ज की। खादी की बिक्री भी बढ़कर 1.25 लाख करोड़ के पार हो गई, देसी घी के बाज़ार में भी रौनक़ है, भारत के डिजिटल भुगतान ने तो क्रान्ति ही ला दी है और खेती! खेत से उपज की पैकेजिंग और उत्पादों की बिक्री के कारण 'खेत से थाली' तक की यात्रा इतनी आसान कभी न थी। निर्बाध डिजिटल भुगतान की सुविधा और डिलिवरी के नए स्टार्टअप्स होने से 'वोकल फ़ॉर लोकल' की माँग के चलते खेती और डेयरी उत्पादक, छोटे और माहिर कारीगर अपना माल देश भर में कहीं भी आसानी से बेच और भेज सकते हैं, जो पहले कभी सम्भव नहीं हो सका था।

'वोकल फ़ॉर लोकल' कई मायनों में भारत की पुनर्खोज का सशक्त माध्यम बना है। उदारीकरण के पहले दौर में अनेक भारतीय विदेशी माल से चकित रहते थे, लेकिन अब हम अपनी अधिक परिपक्व आर्थिक यात्रा, जो 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है, के साथ अपनी विरासत की पुनर्खोज कर रहे हैं कि इतिहास में पूरे विश्व में हमारे देश की बनी वस्तुओं की माँग और लोकप्रियता इतनी अधिक क्यों थी? अब भारतीयों की क्रय शक्ति मज़बूत होने से देश में बनी उत्कृष्ट वस्तुओं को एक बार फिर से दुनिया में ही नहीं, देश में भी उतनी ही मान्यता मिल रही है।

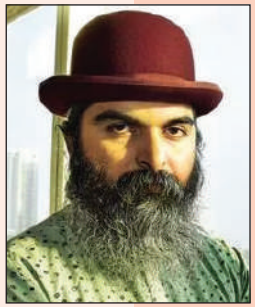

सुकेत धीर
फैशन डिज़ाइनर

वोकल फ़ॉर लोकल : भारत के हथकरघा और लक्ज़री फैशन परिदृश्य का पुनर्जीवन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में खादी को अपनाने पर विशेष ध्यान देने के साथ 'वोकल फ़ॉर लोकल' के महत्त्व के बारे में विस्तार से बात की। हमारी दूरदर्शन टीम ने फैशन डिज़ाइनर ***सुकेत धीर*** *से बातचीत की, जिनके परिधान इस साल लैक्मे फैशन वीक में खादी इंडिया ने प्रदर्शित किए थे। 'मेक इन इंडिया' ने फैशन उद्योग में कैसे क्रान्ति ला दी है, इस पर उन्होंने अपनी राय व्यक्त की।*

मैं पंजाब के एक बहुत छोटे शहर बंगा से हूँ। मैंने अपने प्रारम्भिक वर्ष फगवाड़ा में बिताए। मैं पंजाबी बोलते हुए बड़ा हुआ हूँ। दिल्ली पहुँचने के बाद मैंने हिन्दी और अंग्रेज़ी सीखी। उससे पहले ये दोनों भाषाएँ मेरे लिए पराई थीं। हमारी सारी परम्पराएँ भाषाओं में भरी पड़ी हैं। हम चाहते हैं कि हमारी अगली पीढ़ी को भी वह सब मिले, इसलिए जब भी हमें मौका मिलता है, हम अपने बच्चों को अपने साथ गाँव ले जाते हैं। हमारा परिवार हमारी रचनात्मक प्रक्रिया में शामिल है। मेरे ब्राँड में मेरी पत्नी कम्पनी की मालिक है। वह कम्पनी का कामकाज चलाती हैं, मैं केवल उनके लिए डिज़ाइन करता हूँ।

हमारे व्यवसाय की प्रकृति ऐसी है कि हमें लोकल के लिए वोकल होना होगा, क्योंकि इससे हमारा पूँजी निवेश कम हो जाता है, साथ ही गुणवत्ता नियंत्रण भी रहता है। काम जितना स्थानीयकृत होगा, गुणवत्ता उतनी ही बेहतर होगी। अगर आप देखें तो दुनिया में सबसे ज़्यादा मिशेलिन स्टार रेस्तराँ फ्रांस में स्थित हैं। दरअसल, ये फ्रांस के हर गाँव में हैं। ऐसा किसलिए? क्योंकि उनके लिए ताजा उपज स्थानीय क्षेत्रों से आती है। पूरा पश्चिम वोकल फ़ॉर लोकल है। इसलिए इस भूमि के लिए, जहाँ से यह अवधारणा मूल रूप से उभरी है, बिना किसी देरी के इसे पुनः प्राप्त करना अनिवार्य है। हर 100-200 किलोमीटर पर हमारा खान-पान, हमारी भाषा और हमारी बोली बदल जाती है। भोजन में उपयोग किए जाने वाले मसाले क्षेत्र के अनुसार भिन्न होते हैं और क्षेत्रीय फसल में परिवर्तन के साथ स्वाद भी बदलता है। यहाँ जो कुछ उगता है, उससे थोड़ी अलग चीज़ पंजाब में उगेगी, कश्मीर में कुछ अलग पैदा होगा और राजस्थान में उगाई जाने वाली फसलें काफी अलग हैं। वे फसलें ही पर्यावरण के अनुरूप सबसे अधिक पोषण प्रदान करती हैं। आप जहाँ हैं, वहाँ की भौगोलिक स्थिति के अनुसार भोजन का सेवन करना बहुत जरूरी है। इसी तरह, फैशन में भी आप जितना अधिक स्थानीयकरण करेंगे, विषैले तत्वों का उत्सर्जन उतना ही कम होगा। यदि कार्बन उत्सर्जन कम होगा, तो संसाधन भी अधिक होंगे।

खादी एक समय साधारण मानी जाती थी, लेकिन अब चीज़ें अलग हो गई हैं। लोगों ने अपने अनुभवों से जाना है कि गुणवत्ता का क्या मतलब है। उसी के अनुरूप उन्हें गुणवत्ता प्रदान की जा रही है। मेरा मानना है कि गुणवत्ता में सुधार की गुंजाइश है और यह जल्द से जल्द होना चाहिए। गुणवत्ता में सुधार होता रहा तो लोग खादी खरीदने से नहीं हिचकिचाएँगे। एक ऐसा मुकाम हासिल करना चाहिए, जहाँ खादी देश-विदेश में सबसे महँगे कपड़े के रूप में बिकने लगे।

फैशन के क्षेत्र में 'मेड इन इंडिया' के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है, विशेष रूप से हथकरघा फैशन या लक्जरी फैशन में। यह भारत में सबसे श्रेष्ठतम् और स्पष्ट विकल्प है। इस क्षेत्र में आप बाहर से उत्पाद बनाने के बारे में सोच भी नहीं सकते, क्योंकि वहाँ यह कारखाने में बनाए जाते हैं और वह भी न्यूनतम ऑर्डर मात्रा (MOQ) के आधार पर।

भारत में ऐसी कोई शर्त नहीं है। अगर आपको एक चीज़ बनानी होगी तो बन जाएगी। आप एक मीटर बनाना चाहेंगे तो एक मीटर बन जाएगा। यदि आप 10 मीटर का विकल्प चुनते हैं, तो 10 मीटर बनाया जाएगा। यदि आप एक मीटर प्रिन्ट करना चाहते हैं तो एक मीटर प्रिन्ट हो जाएगा। आप एक फुट या 100 फुट का प्रिन्ट भी कर सकते हैं। अगर आप 100 मीटर या 1,000 मीटर प्रिन्ट कराने जाएँगे तो वो भी बिना किसी रुकावट के हो जाएगा।

निवेश और मात्रा के मामले में, डिज़ाइनर बनना और डिज़ाइन बनाना दुनिया के बाकी हिस्सों की तुलना में भारत में आसान है। ये और बात है कि भारत इतना बड़ा है कि एक गाँव से दूसरे गाँव जाते-जाते आपकी एड़ियाँ घिस जाती हैं। इसके बावजूद हमें कोई परेशानी नहीं है। मैं एक गाँव में पला-बढ़ा हूँ। जब भी हम गाँव में बुनाई का काम करने जाते हैं तो मैं अपने बच्चों को भी अपने साथ ले जाता हूँ ताकि उन्हें भी गाँव की जीवनशैली और कारीगरी के बारे में पता चले।

श्रुति संचेती
फैशन डिज़ाइनर

वोकल फ़ॉर लोकल : भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए दूरदर्शी पहल

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के 106वें एपिसोड में आत्मनिर्भर भारत के सपने को पूरा करने के लिए 'वोकल फ़ॉर लोकल' होने के महत्त्व को दोहराया। 'वोकल फ़ॉर लोकल' ने न केवल देशवासियों में घरेलू उत्पादों के प्रति गर्व पैदा किया है, बल्कि इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इससे स्थानीय कारीगरों के लिए रोज़गार के अवसर भी बढ़े हैं। इस बारे में हमारी दूरदर्शन टीम ने फैशन डिज़ाइनर ***श्रुति संचेती*** *से बात की।*

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक बहुत ही बड़े विज़नरी हैं। उन्होंने शुरू से हमारे जो घरेलू बिज़नेस हैं, जो हमारा लोकल क्राफ्ट है, लोकल टैलेंट है, उसे हमेशा-हरदम प्रोत्साहित किया है। कोविड-19 महामारी में उनकी जो स्कीम थी, 'वोकल फ़ॉर लोकल', यह बहुत ही प्रभावशाली स्कीम है। यह स्कीम लोकल इकोनॉमी, छोटे और लोकल व्यवसाय को सपोर्ट करती है और मुझे लगता है कि हम इससे आत्मनिर्भर हो सकते हैं। भारत एक सेल्फ सफिशिएंट देश है, वोकल फ़ॉर लोकल से हमारी इकोनॉमी और भी प्रभावशाली हो जाएगी और हम इतने आत्मनिर्भर हो जाएँगे कि पूरे विश्व की नज़र भारत पर होगी। मुझे लगता है यह एक बहुत ही ब्रिलिएंट इनीशिएटिव है और अगर हम सब लोग इसे अपनाएँगे तो हम सबको इससे फायदा होगा।

'वोकल फ़ॉर लोकल' एक ऐसा अभियान है, जो हर व्यवसाय के लिए फायदेमंद साबित हो रहा है, खासकर छोटे और घरेलू व्यवसाय के लिए। कोविड-19 महामारी एक बहुत मुश्किल और एक बहुत ही संघर्ष का समय था, लेकिन वोकल फ़ॉर लोकल की बदौलत सभी देशवासियों को एक-दूसरे का साथ मिला और वे एक-दूसरे की मदद कर पाए। वोकल फ़ॉर लोकल निश्चित ही छोटे व्यवसायों और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मदद कर रहा है और भारत एक महाशक्ति बनने की राह पर हैं।

अमृत कलश यात्रा

अज्ञात महानायकों को श्रद्धांजलि

“31 अक्तूबर को ही देशभर में पिछले ढाई साल से चल रहे आज़ादी के अमृत महोत्सव का समापन होगा। आप सभी ने मिलकर इसे दुनिया में सबसे लम्बे समय तक चलने वाले महोत्सव में से एक बना दिया। अपने सेनानियों का सम्मान हो या फिर हर घर तिरंगा, आज़ादी के अमृत महोत्सव में लोगों ने अपने स्थानीय इतिहास को एक नई पहचान दी है। इस दौरान सामुदायिक सेवा की भी अद्भुत मिसाल देखने को मिली है।”

— प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी (‘मन की बात’ सम्बोधन में)

31 अक्तूबर को प्रधानमंत्री मोदी ने कर्त्तव्य पथ पर एक छोटे से पात्र से एक विशाल कलश में मिट्टी उड़ेल कर अमृत कलश यात्रा का समापन किया। यह यात्रा, आज़ादी का अमृत महोत्सव समारोह के समापन समारोह के साथ सम्पन्न हुई, जो प्रधानमंत्री की उपस्थिति में ही इंडिया गेट के निकट सम्पन्न हुआ था।

इन दोनों समारोहों का मिलन प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार द्वारा शुरू की गई दो प्रमुख पहलों का स्वाभाविक निष्कर्ष था। उनमें से एक था ‘मेरी माटी मेरा देश’ अभियान जिसमें अमृत कलश यात्रा भी शामिल थी। इस कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री अमित शाह, अनुराग सिंह ठाकुर और अर्जुन राम मेघवाल सहित सरकार के अन्य वरिष्ठ गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

“भारत की मिट्टी में चेतना है। इसमें एक जीवन रूप है, जिसने सभ्यता के पतन को रोका है...भारत की मिट्टी आत्मा में आध्यात्मिकता के प्रति आकर्षण पैदा करती है।”

— प्रधानमंत्री, इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए

“आज (31 अक्तूबर) लौह पुरुष सरदार पटेल की जयंती है और आज ही के दिन देशभर के *7500* स्थानों से एकत्रित पवित्र मिट्टी यहाँ पहुँची है।”

— अमित शाह, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

समारोह के समापन पर प्रधानमंत्री मोदी ने MY युवा भारत मंच का अनावरण किया, जिसके बाद विभिन्न राज्यों के कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियों ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई।

क्या है अमृत कलश यात्रा

अमृत कलश यात्रा 1 सितम्बर, 2023 को शुरू किए गए 'मेरी माटी मेरा देश' (MMMD) अभियान के दूसरे चरण के हिस्से के रूप में शुरू हुई। MMMD पहल की घोषणा पहली बार प्रधानमंत्री ने अपने 103वें 'मन की बात' सम्बोधन में की थी।

प्रधानमंत्री के आह्वान के बाद, भारत के गाँवों, ज़िलों, ताल्लुकों (देश के सभी प्रशासनिक प्रभाग) से नागरिक अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी निभाने एक प्रेरणा के भाव से आगे आए।

अमृत कलश का सफ़र

गाँवों से ये अलग-अलग मिट्टी माटी कलशों में एकत्र की गई, जिसे बाद में राज्यों की राजधानियों में भेजा गया। राजधानियों से माटी कलश ले जाने वाले राज्य प्रतिनिधियों ने मिट्टी को कर्तव्य पथ पर रखे एक विशाल अमृत कलश में जमा किया।

इस अभियान का उद्देश्य हमारे अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के गाँवों से मिट्टी एकत्र कर दिल्ली में एक शहीदी स्मारक बनाने का है। इस स्मारक को नाम दिया गया है 'अमृत वाटिका'। इसकी स्थापना राष्ट्रीय समर स्मारक के पास की जा रही है।

विभिन्न मिट्टियों की यात्रा अभियान का एकमात्र पहलू नहीं था। एक अन्य मूलभूत पहलू शिलाफलकम के माध्यम से हमारे बहादुरों के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति थी। ये शिलाफलकम स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों के गाँवों और पंचायत क्षेत्रों में स्थापित पत्थर की शिलाएँ हैं।

इन पत्थर की शिलाओं पर हमारे बहादुरों के नाम अंकित हैं। इससे राष्ट्र उनके बलिदानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है।

अमृत कलश यात्रा : एक सांख्यिकीय संदर्भ

700 से अधिक ज़िलों और 6 लाख गाँवों की मिट्टी

36 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 2.3 लाख शिलाफलकम

लगभग 4 करोड़ पंच प्रण प्रतिज्ञा सेल्फी अपलोड की गईं

देश भर में 2 लाख से अधिक 'वीरों का वंदन' कार्यक्रम

2.36 करोड़ से अधिक स्वदेशी पौधे रोपे गए

अमृत कलश यात्रा पर नागरिकों के वक्तव्य

अमृत कलश यात्रा में भाग लेने के लिए प्रधानमंत्री के आह्वान के जवाब में पूरे भारत से लोग कर्तव्य पथ पर आए। हमारे कुछ नागरिकों और नेताओं ने अमृत कलश यात्रा के बारे में क्या कहा, आइए पढ़ें।

"लगातार 30 घंटे की यात्रा के बाद हम यहाँ पहुँचे। ये मिट्टी ओडिशा की हर पंचायत से और उन शहीदों के घरों से इकट्ठा की गई है, जिन्होंने देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है और हम उन लोगों के घरों से भी मिट्टी लाए हैं, जो स्वतंत्रता सेनानी थे। प्रधानमंत्री की सोच मेरे दिमाग में घर कर गई। यह बात हर व्यक्ति के दिल में बैठी हुई है कि हमारी मिट्टी दिल्ली तक पहुँचेगी और दिल्ली में बगीचा बनाएगी।"

— कैप्टन अशोक कुमार दास, बालेश्वर, ओडिशा

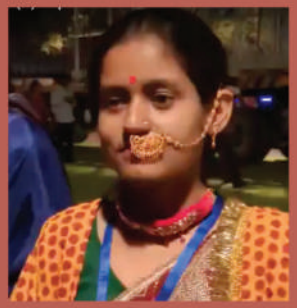

"मेरी माटी मेरा देश बहुत अच्छी अपील है, बहुत अच्छा प्रयास है, क्योंकि हमें देखने को मिल रहा है कि हमारे देश के जो जवान शहीद हुए हैं, उन्हें याद किया जा रहा है और उनके लिए बहुत कुछ किया गया है। इसमें योगदान देने का हमारे लिए बहुत सुनहरा अवसर है।"

— अपराजिता, हरिद्वार, उत्तराखंड

"प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को आगे आकर भाग लेने के लिए प्रेरित करके हमारे देश को गौरवशाली बनाने के लिए एक आन्दोलन शुरू किया। भारत आज खेलों में प्रगति कर रहा है। यह चंद्रमा पर वहाँ उतरा है, जहाँ कोई अन्य देश नहीं उतरा। भारत अन्य क्षेत्रों में भी प्रगति कर रहा है। प्रधानमंत्री ने 2047 तक भारत को दुनिया का सबसे विकसित देश बनाने का आह्वान किया। नागरिकों के रूप में हम इस देश की 'माटी' से सम्बन्धित होने की भावना महसूस करते हैं और यह हमारा कर्तव्य होना चाहिए कि हम अपने देश को सभी क्षेत्रों में विकसित करने की आकांक्षा रखें। इसी भावना के साथ हम घर-घर गए हैं, लोगों से उनके घरों में मुलाकात की है, अपने साथ 'माटी' से भरा कलश लेकर आए हैं।"

— रमापति राम त्रिपाठी, सांसद, देवरिया, उत्तर प्रदेश

मेरा युवा भारत

सपने, विश्वास और उपलब्धि

“मेरा युवा भारत, यानी MY भारत संगठन, भारत के युवाओं को राष्ट्र निर्माण के विभिन्न आयोजनों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देगा। ये विकसित भारत के निर्माण में भारत की युवा शक्ति को एकजुट करने का एक अनोखा प्रयास है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“मेरा युवा भारत (MY भारत) में भारत के युवा परिदृश्य को नया रूप देने के उद्देश्य से एक अभूतपूर्व दृष्टि शामिल है। यह एक क्रान्तिकारी पहल है, जो भारत में युवाओं की भागीदारी और विकास के एक नए युग का सूत्रपात कर रही है।”

-अनुराग सिंह ठाकुर
सूचना एवं प्रसारण और युवा मामले एवं खेल मंत्री

सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर 31 अक्तूबर को एक राष्ट्रव्यापी संगठन की नींव रखी गई। प्रधानमंत्री ने मेरा युवा भारत (MY भारत) लॉन्च किया। युवा विकास और युवा नेतृत्व वाले विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण, प्रौद्योगिकी-संचालित सुविधा प्रदाता के रूप में इसकी परिकल्पना की गई है। इसका लक्ष्य सरकार के सम्पूर्ण दायरे में एक विकसित भारत के निर्माण के लिए युवाओं को उनकी आकांक्षाओं को साकार करने और योगदान देने के लिए सशक्त बनाने के लिए समान अवसर प्रदान करना है। यह एक ऐसे ढाँचे की कल्पना करता है, जहाँ हमारे देश के युवा कार्यक्रमों, संरक्षकों और अपने स्थानीय समुदायों के साथ सहजता से जुड़ सकें। यह जुड़ाव स्थानीय मुद्दों के बारे में उनकी समझ को गहरा करने और रचनात्मक समाधानों में योगदान करने के लिए उन्हें सशक्त बनाने के लिए डिजाइन किया गया है।

इसके लिए पात्रता सम्बन्धी कुछ मानदंड लागू होते हैं। इस पहल का उद्देश्य भारत के युवाओं की क्षमता का दोहन करना है। मेरा युवा भारत पोर्टल 15 से 29 वर्ष की आयु के युवाओं को समर्पित है।

इसका लक्ष्य उन्हें मज़बूत नेता के रूप में सशक्त बनाना और सफल करियर बनाने में सक्षम बनाना है। यह पोर्टल युवा उन्नति के लिए समर्पित एक व्यापक सरकारी मंच बनाने के इर्द-गिर्द घूमता है। इसमें युवाओं के बीच नेतृत्व का विकास करना शामिल है, जिसमें अनुभव-आधारित शिक्षा और सामाजिक नवाचार के माध्यम से उनके नेतृत्व कौशल को बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, जो अंततः उन्हें अपने समुदायों में नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम बनाता है।

इसके अतिरिक्त, MY भारत का लक्ष्य युवाओं की आकांक्षाओं और उनके समुदायों की ज़रूरतों के बीच बेहतर तालमेल स्थापित करना है, जिससे मौजूदा पहलों को एक साथ मिलाकर युवाओं और सरकारी मंत्रालयों के लिए वन-स्टॉप शॉप के रूप में सेवा करके कार्यक्रम को सशक्त किया जा सके। इसका उद्देश्य एक केन्द्रीकृत युवा डेटाबेस विकसित करना और युवाओं को सरकारी पहलों और युवाओं के साथ जुड़े अन्य हितधारकों से जोड़ने के लिए बेहतर दोतरफा संवाद की सुविधा प्रदान करना है। युवाओं और सरकारी परियोजनाओं के बीच दो-तरफा संवाद चैनल की सुविधा दोनों पक्षों के लिए सर्वोत्तम कौशल सुनिश्चित करती है। इसके अलावा MY भारत एक डिजिटल इकोसिस्टम विकसित करके ऐसी पहुँच सुनिश्चित करने का प्रयास करता है, जिसमें भौतिक और डिजिटल अनुभवों का मिश्रण हो।

खासकर अमृत काल में MY भारत जैसे मंच की आवश्यकता सर्वोपरि है, क्योंकि भारत के युवा देश के भविष्य को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। भारत 2047 तक अमृत भारत बनाने का प्रयास कर रहा है। ऐसे

में एक एकीकृत ढाँचा स्थापित करना महत्त्वपूर्ण है, जो ग्रामीण, शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के युवाओं को एक साथ लाता है। पिछले 50 वर्षों में तैयार की गई मौजूदा सरकारी योजनाओं के फलीभूत उभरते शहरी-ग्रामीण परिदृश्य के आलोक में पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है। इसके अलावा आज की तेज़तर्रार, प्रौद्योगिकी-संचालित दुनिया में युवाओं के साथ जुड़ने और उन्हें सशक्त बनाने, उन्हें कार्यक्रमों और सामुदायिक गतिविधियों से जोड़ने के लिए एक समकालीन मंच आवश्यक है। MY भारत के फिजिकल इकोसिस्टम सम्बन्धी अंतराल को पाट देगा, पहुँच सुनिश्चित करेगा और युवाओं को सामुदायिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने की सुविधा प्रदान करेगा। 'मेरी माटी मेरा देश' जैसी पहल से भी यह स्पष्ट होता है।

मेरा युवा भारत (MY भारत) एक दूरदर्शी पहल है, जिसमें भारत की युवा आबादी की ऊर्जा, आकांक्षाओं और नवाचार का दोहन करने की अपार क्षमता है। जैसे-जैसे इस कार्यक्रम की जड़ें जमेंगी और आगे बढ़ेगा, यह राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, क्योंकि युवा भारतीय भारत के विकास और समृद्धि में नेता और योगदानकर्ता के रूप में उभरकर सामने आएँगे।

MY भारत

मेरा युवा भारत

भारत सरकार द्वारा युवाओं के विकास और युवाओं के नेतृत्व वाले विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण, प्रौद्योगिकी-संचालित सुविधा प्रदाता की स्थापना की जा रही है, जो एक व्यापक संस्थागत तंत्र प्रदान करेगा। यह मंच देश भर में युवा स्वयंसेवी अवसरों को मौद्रिक आदान-प्रदान के बिना केंद्रीकृत करता है, वन-स्टॉप शॉप के रूप में कार्य करता है और एक केंद्रीकृत युवा डेटाबेस बनाता है। यह तंत्र युवाओं को उनकी आकांक्षाओं को साकार करने और 2047 तक अमृत भारत के निर्माण के लिए अवसरों तक समान पहुँच प्रदान करेगा।

कैसे है मेरा युवा भारत पोर्टल लाभकारी ?

- व्यावहारिक शिक्षा के माध्यम से नेतृत्व विकास
- एकीकरण के माध्यम से कार्यक्रम की प्रभावशीलता में वृद्धि
- सामुदायिक नेतृत्व और नवाचार के लिए युवा निवेश में वृद्धि
- युवाओं और मंत्रालयों के लिए केंद्रीय संसाधन
- युवाओं के नेतृत्व वाले विकास और सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना।
- युवा सरकारी परियोजनाओं और हितधारकों के बीच बेहतर संचार
- अभिगम्यता के लिए फ़िजिटल वातावरण की स्थापना

कैसे करें पंजीकरण ?

ब्राउज़र खोलें और टाइप करें - 'mybharat.gov.in'

स्क्रीन के ऊपरी दाएँ कोने पर उपलब्ध लॉगिन विकल्प पर क्लिक करें।

अपना मोबाइल नम्बर दर्ज करें या आप उपयोगकर्ता नाम, ईमेल आदि जैसे अन्य विकल्पों से भी लॉगिन कर सकते हैं।

सहमति विकल्प पर क्लिक करें।

साइन इन बटन पर क्लिक करके लॉगिन करें और खुद को पंजीकृत करें।

अनुराग सिंह ठाकुर

सूचना एवं प्रसारण और युवा मामले एवं खेल मंत्री

समग्र युवा सशक्तीकरण के माध्यम से भारत के भविष्य को आकार देगा 'मेरा युवा भारत'

भारत की जनसंख्या का एक अहम हिस्सा युवा आबादी का है, जो राष्ट्र के भविष्य के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दृष्टि का आधार है। देश की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 35 वर्ष से कम है और प्रधानमंत्री इसी विशाल जनसमूह को केवल संख्यात्मक लाभ के रूप में नहीं, बल्कि विकास की शक्ति के रूप में देखते हैं। प्रधानमंत्री इस बात पर बल देते हैं कि जनसंख्या की इस शक्ति को पोषित और सशक्त करना महत्त्वपूर्ण है और यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि वे भारत के समग्र विकास और वैश्विक प्रतिष्ठा के सक्रिय भागीदार और उत्प्रेरक बनें। अपने हाल की 'मन की बात' के अंक में माननीय प्रधानमंत्री ने 'मेरा युवा भारत' स्वायत्त निकाय के बारे में संक्षेप में बताया, जिसका अखिल भारतीय शुभारम्भ देश की एक लब्ध-प्रतिष्ठित हस्ती सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर किया।

मेरा युवा भारत (MY भारत) में भारत के युवा परिदृश्य को नया रूप देने के उद्देश्य से एक अभूतपूर्व दृष्टि शामिल है। देश की युवा पीढ़ी की नेतृत्व क्षमता को समर्पित यह अभिनव पहल, प्रयोगात्मक शिक्षा पर बल देती है। इसका प्राथमिक लक्ष्य, युवाओं को मात्र एक ग्रहणकर्ता की बजाय परिवर्तन का सक्रिय एजेंट बनाना है, जो देश भर में सामाजिक नवाचार और नेतृत्व विकास की संस्कृति को बढ़ावा दे। मेरा युवा भारत, युवाओं की आकांक्षाओं को उनके समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना चाहता है, एक ऐसा गहरा सम्बन्ध बनाना चाहता है, जो उन्हें सामाजिक विकास में अग्रणी भूमिकाओं के लिए प्रेरित करे। मेरा युवा भारत के केन्द्र में मौजूदा युवा विकास कार्यक्रमों को सुधार कर एक फ़िजिटल इकोसिस्टम बनाना है, जिसमें विभिन्न पहलों को बिना किसी बाधा के एक जगह सुलभ कराया जा सके। यह एक ऐसा केंद्रीकृत गढ़ है, जो युवाओं, सरकार और निजी निकायों को एक सहज मंच प्रदान करता है, जो राष्ट्र में उपलब्ध विभिन्न सेवाओं और अवसरों तक पहुँच को सरल और सुलभ बनाता है। इस पहल की पहचान एक केंद्रीकृत डेटाबेस स्थापित करने में निहित है, जो उचित और सही निर्णय लेने और सटीक हस्तक्षेप करने का मज़बूत आधार है।

अपनी समग्र दृष्टि से मेरा युवा भारत, युवाओं को न केवल अवसर देकर सशक्त करना चाहता है, बल्कि उनकी आकांक्षाओं को सक्रिय योगदान में बदलने के आवश्यक उपकरण, नेटवर्क और मंच भी उपलब्ध करवाता है, जिससे सशक्त, सहानुभूतिपूर्ण और संसाधनपूर्ण नेताओं की एक ऐसी पीढ़ी को बढ़ावा मिलता है, जो भारत के भविष्य को आकार देने में सक्षम होगी।

मेरा युवा भारत (MY भारत), एक क्रान्तिकारी पहल है, जो भारत में युवाओं की भागीदारी और विकास के एक नए युग का सूत्रपात कर रही है। 'मेरा युवा भारत' ग्रामीण, शहरी तथा रुर्बन युवाओं को एक मंच पर एकजुट करके ऐसी अभूतपूर्व दृष्टि देता है, जो पिछले पाँच दशकों में विकसित हुए शहरी-ग्रामीण परिवेश में आए बदलावों के अनुरूप है। संक्षेप में, 'मेरा युवा भारत' एक परिवर्तनकारी शुरुआत है, जो भारत की विविध युवा शक्ति को एकजुट, सशक्त और संगठित करने के अनुरूप रणनीतियाँ देती है, जिनसे अधिक जीवन्त और समावेशी भविष्य की दिशा का मार्ग प्रशस्त होता है।

मेरा युवा भारत, आज के युवाओं के लिए कक्षा में सीखने के अलावा व्यावहारिक अनुभव की आवश्यकता भी महसूस करता है। यही अंतर पाटने के लिए इस पहल में प्रयोगात्मक सीखने के कार्यक्रम विशेष रूप से तैयार किए गए हैं, जिनमें युवा वास्तविक दुनिया में स्थानीय कारोबार, स्वशासी निकायों और सरकारी संस्थानों में व्यावहारिक अनुभव लेकर सीखेंगे। वेबसाइट www.mybharat.gov.in इन सभी पहलों का

मंच है, जो युवाओं की क्षमताएँ बढ़ाने के लिए तेज़ी से विकसित डिजिटल परिदृश्य, सोशल मीडिया और उभरती प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाता है। प्रत्येक प्रतिभागी को यहाँ अपना कौशल और गतिविधियाँ प्रदर्शित करने वाली व्यक्तिगत प्रोफ़ाइल बनाने का अवसर मिलता है, जो अनिवार्य रूप से उनकी विकास यात्रा और योगदान उजागर करने को एक समर्पित माइक्रोसाइट या प्रोफ़ाइल पृष्ठ उपलब्ध करवाता है।

युवा मामलों के विभाग ने देश के सात राज्यों– पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश और असम में मई से सितम्बर, 2023 के बीच में एक पायलट प्रोजेक्ट चलाया था। इस प्रोजेक्ट से देश में युवाओं को अनुभव के ऐसे अवसर दिए जाने की ज़रूरत सामने आई, जिससे वे जान सकें कि वास्तव में काम किस प्रकार किया जाता है, काम कर रहे लोगों से कैसे जुड़ा जाता है, अपने लिए परामर्श गुरु कहाँ मिलता है और ऐसे लोगों से मिला जाए, जो अपने बूते धन-दौलत कमा रहे हैं। मेरा युवा भारत में, प्रयोगात्मक सीखने के कार्यक्रम में इन सभी आवश्यकताओं– व्यावहारिक रूप से सीखने, आत्म-विश्वास बढ़ाने और युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवरों के सम्पर्क में लाने पर ध्यान दिया गया है। इन अनुभवों से न केवल व्यावहारिक समझ मिलेगी, बल्कि व्यक्तिगत क्षमता, बात कहने और सुनने का तरीका तथा टीम में काम करने की कीमत, सामूहिक उपलब्धि की मानसिकता पैदा करने का अनुभव मिलेगा।

मेरा युवा भारत की दृष्टि सिर्फ़ डिजिटल कनेक्टिविटी तक नहीं, उससे आगे भी है। इसका उद्देश्य एक ऐसा फ़िजिटल इकोसिस्टम बनाना है, जिसमें भौतिक (फिज़िकल) और डिजिटल क्षेत्र का निर्बाध संगम हो। इस रचनात्मक पहल के तहत युवा सरकार और नागरिकों के बीच मुख्य सेतु के रूप में कार्य करने में सक्षम होते हैं, जिसे 'युवा सेतु' नाम दिया गया है। युवा मामलों के मंत्रालय का एक अन्य उत्कृष्ट कार्यक्रम 'मेरी माटी मेरा देश' वेब पोर्टल www.mybharat.gov.in पर है, जिसे देश भर के 5 करोड़ युवा देख चुके हैं। प्रौद्योगिकी संचालित मंच से इस पहल का उद्देश्य युवा मामलों के विभाग के प्रयासों को दूर तक ले जाना है, जिससे भारत के युवाओं के इस महत्त्वपूर्ण नेटवर्क में प्रभावशाली जुड़ाव और सहयोग में तेज़ी आए।

मेरा युवा भारत का यह डिजिटल मंच प्रतिभागी युवाओं के बीच एक ऐसा स्थाई सम्बन्ध सुनिश्चित करता है, जो उनके कार्यक्रमों की अवधि पूरी होने के बाद भी जारी रहे। अपनी रुचियों, क्षमताओं और अनुभव प्रदर्शित करने के लिए समर्पित प्रोफ़ाइल पृष्ठों के माध्यम से प्रत्येक युवा इस मंच में व्यक्तिगत

पोर्टल	MY भारत पोर्टल या मेरा युवा भारत पोर्टल	आयु सीमा	15 से 29 वर्ष
आधिकारिक वेबसाइट	mybharat.gov.in	MY Bharat आपको इनसे जोड़ता है	व्यवसाय, सरकारी और गैर-लाभकारी संगठन

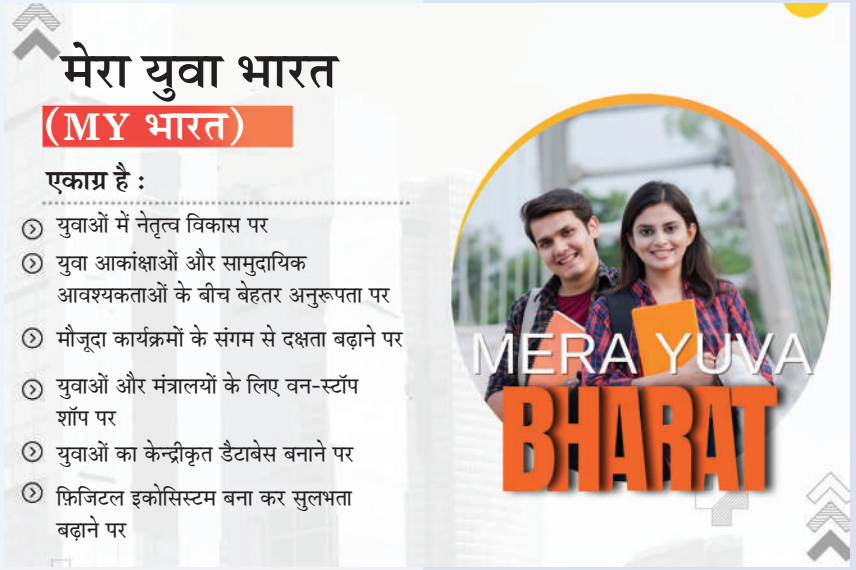

स्थान प्राप्त करता है। इससे विभिन्न क्षेत्रों के समान सोच रखने वाले युवाओं के बीच सम्बन्धों को बढ़ावा मिलता है, जिससे वे भौगोलिक सीमाओं से परे साझा हितों और आकांक्षाओं के आधार पर आपस में जुड़कर सहयोग करने में सक्षम होते हैं। इस सरकारी मंच से प्राप्त प्रमाणपत्र, महत्त्वाकांक्षी युवाओं के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, जिससे उनका व्यक्तिगत बायोडाटा अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

कॉलेज के पूर्व छात्रों, विश्वविद्यालयों और स्थापित बिज़नेस मेंटोरिंग से उन परामर्शदाताओं को जोड़ता है, जो युवा शक्ति के साथ अपने अनुभव साझा करने के इच्छुक हैं। इस तरह का व्यक्तिगत मार्गदर्शन, युवा उद्यमियों के लिए बहुत कीमती होता है, जिससे उन्हें अपने उद्यम की अवधारणा बनाने और नींव मज़बूत करने में मदद मिलती है। मेरा युवा भारत के ढाँचे में ऑनलाइन और भौतिक बातचीत की सुविधा होने से न केवल मेंटोरशिप एक बार फिर से परिभाषित होती है, बल्कि केवल वित्तीय मदद के अलावा यह भी स्वीकारती है कि अनुभव का अपना अमूल्य महत्त्व है।

मेरा युवा भारत, युवा विकास की एक दूरदृष्टि है, जो सशक्तीकरण और समावेश के एक नए युग का सूत्रपात करती है। आकांक्षाओं और व्यावहारिक अवसरों के बीच की खाई पाटकर यह पहल ऐसे सक्रिय, व्यस्त और दूरदर्शी युवाओं के लिए मार्ग प्रशस्त करती है, जो भारत के भविष्य को आकार देने के लिए तत्पर हैं। देश की युवा आबादी की क्षमता का भरपूर उपयोग करके यह पहल समावेशी विकास और सामूहिक प्रगति की एक आशाजनक तस्वीर पेश करती है, जो 2047 तक 'विकसित भारत' की यात्रा पूरी करने में राष्ट्र की आकांक्षाओं को मूर्त रूप देती है।

विविधता में एकता

एक भारत, श्रेष्ठ भारत में साहित्य की भूमिका

भारतीय साहित्य हमारे राष्ट्र के हृदय में एक अद्वितीय और प्रतिष्ठित स्थान रखता है। यह विविध सांस्कृतिक विरासत का भंडार है, जो हमारे राष्ट्र को परिभाषित करता है। असंख्य कहानियों, परम्पराओं और भाषाओं को दर्शाता है, जो 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' द्वारा साहित्य के उपयोग से भारत के विभिन्न क्षेत्रों को साथ जोड़े रखने के साथ आपसी सद्भाव को बढ़ावा देता है। यह विचारों और परम्पराओं के आदान-प्रदान, लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण और बोलियों को पुनर्जीवित करने को प्रोत्साहित करता है। यह पहल इस कहावत की पुष्टि करती है कि हमारी ताकत विविधता के बीच एकता में निहित है।

*106*वें 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने दो प्रेरक व्यक्तियों- **ए.के. पेरूमल** और **शिवशंकरी** जी के उल्लेखनीय प्रयासों पर प्रकाश डाला। ये दोनों तमिलनाडु की गौरवशाली विरासत पर विशेष ध्यान देने के साथ, पूरे भारत में साहित्य को बढ़ावा देने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए समर्पित हैं।

स्टोरीटेलिंग के लिए समर्पित जीवन

पिछले 40 वर्षों से मैं एक ऐसे मिशन के लिए समर्पित हूँ, जो लोक कलाओं, समृद्ध परम्पराओं, मंदिर संस्कृति और दो कालातीत महाकाव्यों- रामायण और महाभारत के गहन मूल्यों की मेरी खोज से शुरू हुआ। इस खोज के दौरान मेरी नज़र तमिलनाडु के दक्षिणी जिले में चमड़े की एक आकर्षक कठपुतली कला पर पड़ी, जो रामायण की कहानी को उसके सबसे सरल रूप में कुशलता से बयान करती है। तमिल में 'थोलपावाकुथु' के नाम से जानी जाने वाली इस कला शैली से प्रभावित होकर मैंने इसके बारे में जानकारी एकत्र करना शुरू कर दिया। मैंने तमिल थोलपावाकुथु को समर्पित एक पुस्तक भी लिखी है, जो मौखिक परम्पराओं और रामायण की कहानी में निहित नैतिक मूल्यों को खूबसूरती से समाहित करती है। इस कला रूप ने चमड़े की कठपुतलियों के माध्यम से रामायण और अन्य मौखिक लोक कथाओं की कहानियों को जीवंत करते हुए सभी आयु के लोगों में नैतिक मूल्यों को शामिल करने का प्रयत्न किया है।

इन कहानियों के प्रति मेरे आकर्षण ने मुझे रामायण के विभिन्न संस्करणों को इकट्ठा करने और दस्तावेजीकरण करने के लिए प्रेरित किया, जिनमें से प्रत्येक संस्करण लोक कथाओं से भरपूर था। मैंने विभिन्न पुस्तकें लिखी हैं, जो इन मनोरम कहानियों पर प्रकाश डालती हैं, जिनमें रामन येत्तनई, रामनडी और अध्यात्म रामायणम शामिल हैं। इन साहित्यिक प्रयासों के माध्यम से मेरा लक्ष्य हमारे प्राचीन समाज की कहानियों, सांस्कृतिक विरासत और पारम्परिक जीवन शैली को संरक्षित करना है।

-ए.के. पेरूमल

निट इंडिया : सम्पूर्ण देश में साहित्यिक यात्रा

साहित्य के माध्यम से भारत की विविधता को एक साथ बुनना मेरा एक स्वप्निल प्रोजेक्ट था, इस साहित्यिक प्रेम की परिणति में मुझे 16 साल लगे। यह सब तब शुरू हुआ, जब मैंने एक लेखक के रूप में 25 वर्ष पूरे कर लिए। मुझे अपने देश को, साथ ही उस साहित्य को कुछ गहन वापस देने की तीव्र इच्छा महसूस हुई, जिसने मुझे पहचान दिलाई।

1993-94 में मैंने 18 भाषाओं में भारतीय साहित्य की खोज से शुरुआत की और उन्हें चार क्षेत्रों में विभाजित किया। 90 के दशक में आधुनिक प्रौद्योगिकीयों का अभाव था, जैसे उस समय गूगल या इंटरनेट नहीं थे। इसका मतलब था स्वयं पुस्तकालय में दौरे करना, हस्तलिखित नोट्स तैयार करना और ऑनलाइन खोज की सुविधा के बिना लेखकों तक पहुँचना।

तीन स्तरों पर काम करते हुए- होमवर्क, फील्डवर्क और साक्षात्कार- मुझे परिवहन और प्रौद्योगिकी में चुनौतियों का सामना करना पड़ा। आत्मनिर्भर नारी होने के नाते मैंने पंजीकृत पोस्ट के माध्यम से लेखकों से सम्पर्क किया, जब फ़ोन एक विलासिता थी।

पूर्वी भारत के साक्षात्कारों को उनके अनूठे उच्चारण के साथ लिपिबद्ध करना एक अत्यंत कठिन कार्य था। सम्पादन और संकलन में 16 साल लगे, इस दौरान मैंने अपना निजी लेखन रोक दिया। मुझे बहुत ख़ुशी हुई, जब साहित्य अकादमी ने स्वीकार किया कि यह परियोजना भारतीय साहित्य में एक अग्रणी प्रयास है।

निट इंडिया ने मुझे साहित्यिक दिग्गजों से मिलने का अवसर दिया और मुझे उनकी बौद्धिक आँखों से दुनिया को देखने का मौका दिया, जिससे काम प्रामाणिक हो गया। दूसरा वरदान था भारत दर्शन यात्रा का अवसर मिलना।

लोग सवाल कर सकते हैं कि एक तमिल लेखक के रूप में मैंने अंग्रेज़ी क्यों चुनी। मेरा लक्ष्य इससे सभी 18 भाषाओं को कवर करना था और हर राज्य, कॉलेज और पुस्तकालय तक पहुँचना था। मेरी मुख्य इच्छा है कि युवा पीढ़ी भारत के इतिहास, चमत्कारों और सांस्कृतिक सम्पदा के बारे में जाने। मेरा उद्देश्य साहित्य के माध्यम से भारतीयों को भारतीयों से परिचित कराना था, यह एक संतोषजनक कार्य है, जो साहित्यिक दिग्गजों के विचारों को प्रतिबिम्बित करता है।

मुझे उम्मीद है कि यह प्रोजेक्ट हर राज्य, कॉलेज और लाइब्रेरी तक पहुँचेगा और इस महान देश के अविश्वसनीय विवरणों के बारे में सभी को बताएगा।

-शिवशंकरी

भारत के प्रतिष्ठित जनजातीय व्यक्तित्व

प्रेरक जीवन और विरासतें

भारत में प्रतिष्ठित जनजातीय व्यक्तित्वों के प्रेरक जीवन और विरासत ने समाज, देश की स्वतंत्रता और इसके समग्र विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। आज भी हम इस बात की पुष्टि कर सकते हैं कि हमारे आदिवासी समुदाय प्रकृति की देखभाल और संरक्षण के लिए पूरे दिल से समर्पित हैं। ये प्रयास हम सभी के लिए प्रेरणा का बहुत बड़ा स्रोत हैं। इन आदिवासी नायकों ने देश के इतिहास, समानता पर एक अमिट छाप छोड़ी है और सामाजिक समानता की खोज में महती योगदान दिया है।

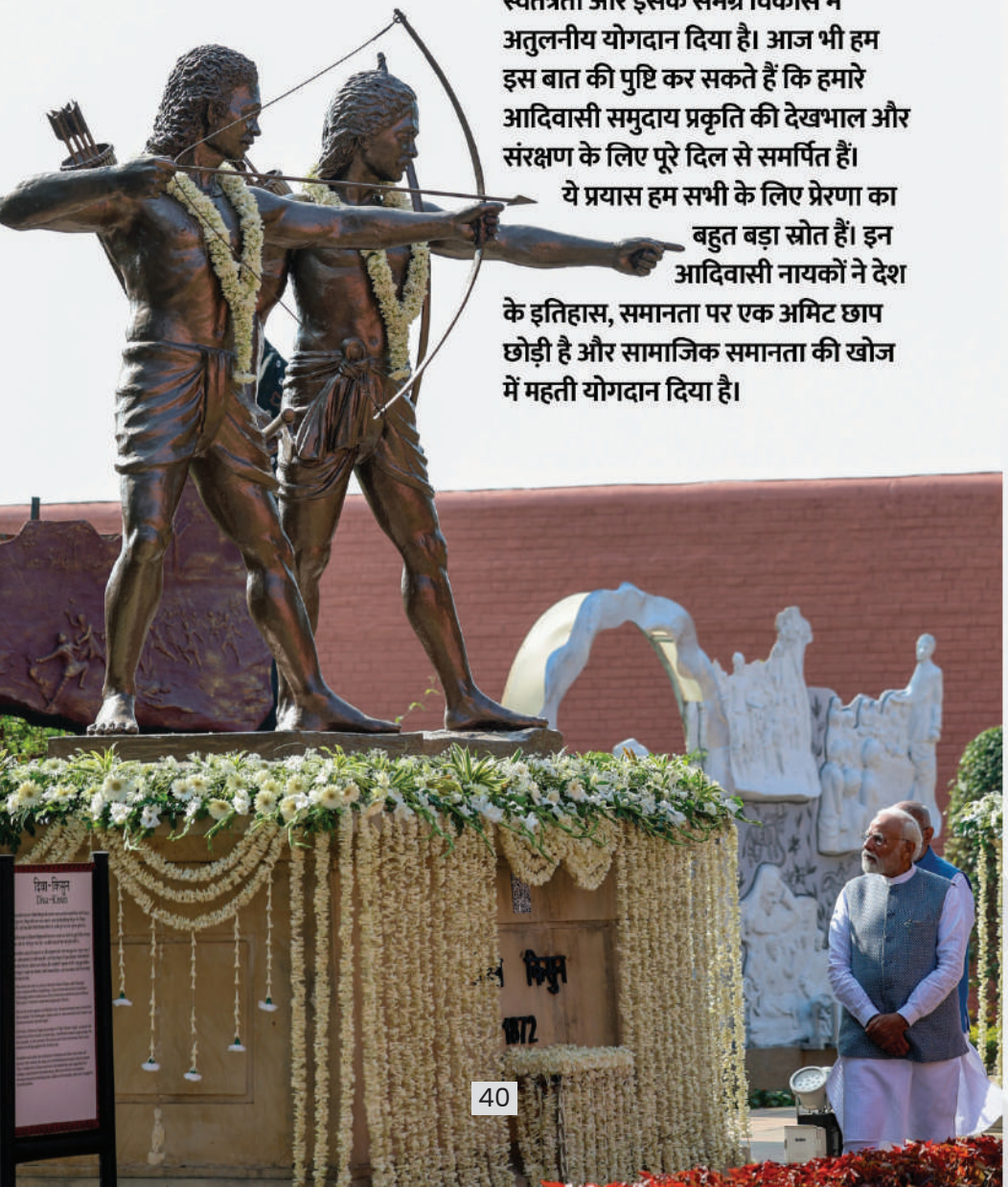

भगवान बिरसा मुंडा

युवा मुंडा नेता बिरसा ने ब्रिटिश शासन से अपने लोगों की आज़ादी के लिए लड़ाई लड़ी और नेतृत्व, धर्म और सम्मान की उम्मीद जगाई। 1894 में गिरफ्तार होकर उन्होंने दो साल जेल में बिताए और 1900 में पकड़े जाने के बाद जेल में उनकी मृत्यु हो गई। आज भी अंग्रेजों के खिलाफ़ उनके संघर्ष के लिए उनका सम्मान किया जाता है।

टंटिया भील

'इंडियन रॉबिन हुड' के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ 12 साल तक सशस्त्र संघर्ष किया, ग़रीबों का समर्थन करने के लिए सरकारी ख़ज़ाने को लूटा। अंततः गिरफ्तार कर उन्हें वर्ष 1889 में फाँसी की सज़ा सुनाई गई।

तिलका माँझी

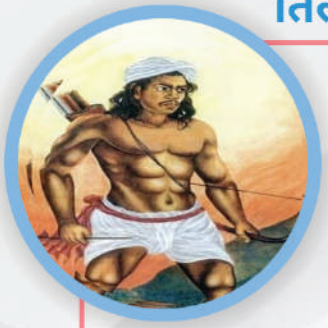

अपने लोगों और भूमि की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्पित तिलका ने आदिवासियों को धनुष और तीर के उपयोग में प्रशिक्षित कर एक सेना में संगठित किया। 1770 में संथाल क्षेत्र में भयंकर अकाल पड़ा। इसके साथ ही उनका 'संथाल हूल' (संथालों का विद्रोह) शुरू हुआ। उन्होंने अंग्रेजों और उनके चापलूस सहयोगियों पर हमला जारी रखा। 1771 से 1784 तक तिलका ने औपनिवेशिक अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया।

शहीद वीर नारायण सिंह

1857 के सिपाही विद्रोह के दौरान, एक आदिवासी जमींदार नारायण सिंह ने किसानों की मदद के लिए जमा किया हुआ अनाज वितरित किया। इस कृत्य के लिए उन्हें 10 दिसम्बर, 1857 को रायपुर में सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी गई। वह पहले अगस्त, 1857 में हिरासत से भाग गए थे, लेकिन देवरी के जमींदार की मदद से उन्हें पुनः पकड़ लिया गया था।

वीर रामजी गोंड

तेलंगाना के एक प्रमुख नेता रामजी गोंड ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में हैदराबाद रियासत के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। गोंड आदिवासी समुदाय का नेतृत्व करते हुए और रोहिल्लाओं के साथ मिलकर उन्होंने ब्रिटिश और निज़ाम के उत्पीड़न के खिलाफ़ विद्रोह किया। लगभग दो वर्षों के प्रतिरोध और सशस्त्र संघर्षों के बाद, 1860 में विद्रोह को दबा दिया गया था। रामजी गोंड को बाद में गिरफ्तार कर, मुकदमा चलाया गया और फाँसी दे दी गई, लेकिन उनके महान योगदान साम्राज्यवाद के खिलाफ़ लड़ाई को प्रेरित करते रहे।

वीर गुंडाधुर

शहीद गुंडाधुर ने 1910 में छत्तीसगढ़ के बस्तर में ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ आदिवासी विद्रोह का नेतृत्व किया, जिसे 'भूमकाल आन्दोलन' के नाम से जाना जाता है। बस्तर में दमनकारी ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष के कारण व्यापक जनजातीय आन्दोलन शुरू हो गया। इस आन्दोलन ने ब्रिटिश कार्यालयों और संचार नेटवर्क को नष्ट कर दिया। हालाँकि मई 1910 में इस आंदोलन को बेरहमी से कुचल दिया गया।

अल्लूरी सीताराम राजू

एक निडर संन्यासी, जिन्हें 1924 में कथित विश्वासघात के रूप में फाँसी दे दी गई। फाँसी से पहले इन्होंने न्याय और स्वतंत्रता की वकालत करते हुए, ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ़ दो साल तक आदिवासी विद्रोह का नेतृत्व किया। इन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ़ गुरिल्ला युद्ध, नेतृत्व और छापे मारे, जिससे अधिकारी क्रोधित हो गए। उनकी विरासत एक प्रेरणादायक साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी के रूप में कायम है।

यू कियांग नोंगबा

मेघालय के एक बहादुर स्वतंत्रता सेनानी, यू कियांग नोंगबा ने ब्रिटिश उत्पीड़न को चुनौती दी और 30 दिसम्बर, 1862 को उन्हें फाँसी दे दी गई। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि अगर फाँसी के बाद उनका सिर पूर्व की ओर हो जाएगा, तो भारत को आज़ादी मिल जाएगी, जैसा कि हुआ। उन्हें प्रतिरोध का प्रतीक बना दिया गया और मरणोपरांत उन्हें सम्मानित किया गया।

रानी गाइदिन्ल्यू

रानी गाइदिन्ल्यू, एक नागा स्वतंत्रता सेनानी ने अंग्रेजों के खिलाफ़ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया, उन्हें 16 साल की उम्र में जेल में डाल दिया गया और अपनी रिहाई के बाद भी उन्होंने अपने समुदाय की भलाई के लिए काम करना जारी रखा। उनके साहस के लिए उन्हें 'रानी' की उपाधि मिली और पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

राजमोहिनी देवी

माँझी जनजाति की नेता राजमोहिनी देवी ने 1960 में 80,000 अनुयायियों के साथ, गाँधीवादी आदर्शों को बढ़ावा देने तथा शराबबंदी तथा महिला मुक्ति जैसे मुद्दों को सम्बोधित करते हुए 'बापू धर्म सभा आदिवासी सेवा मंडल' की स्थापना की।

गोविंद गुरु

1899-1900 के अकाल ने आदिवासियों को बुरी तरह प्रभावित किया। गोविंद गुरु के नेतृत्व में भीलों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए भगत आन्दोलन शुरू किया गया था। 1913 में गुरु और अनुयायी मानगढ़ पहुँचे; विद्रोह की अफवाहों के कारण दुखद मानगढ़ नरसंहार हुआ, जिसमें 1,000 से अधिक लोगों की जान चली गई।

रानी दुर्गावती

महोबा के प्रसिद्ध चंदेला राजवंश की वंशज और गढ़ा-कटंगा के गोंड साम्राज्य की रानी दुर्गावती ने बड़े साहस और नेतृत्व के साथ मुगल साम्राज्य की ताकत का मुकाबला किया। अपने समय की कई अन्य महिलाओं की तरह उन्होंने दुश्मन के हाथों में पड़ने के बजाय मौत को गले लगाना चुना। हिन्दू देवी दुर्गा के नाम पर रखा गया इनका नाम देवी का मानव अवतार साबित हुआ।

रानी कमलापति

रानी कमलापति ने अपने पति की मृत्यु के बाद भोपाल राज्य के प्रबंधन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। राज्य में प्रतिद्वंद्विता और अराजकता के दौर में व्यवस्था स्थापित करने में उनकी महती भूमिका थी।

भीमा नायक

भीमा नायक ने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी थी। जिन क्षेत्रों में उन्होंने प्रेरणा के रूप में कार्य किया, उनमें महाराष्ट्र में बड़वानी से लेकर खानदेश तक शामिल थे। उनके द्वारा संगठित सेना में लगभग 10,000 स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्हें निमाड़ के रॉबिन हुड के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश ख़ज़ाने को लूटा और उसे गरीब लोगों के बीच वितरित किया। उन्हें अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया तथा पोर्ट ब्लेयर और निकोबार भेज दिया, जहाँ दिसम्बर, 1876 में उन्हें फाँसी दे दी गई। उनके द्वारा किए गए बलिदान के सम्मान में राज्य में हर साल शहीदी दिवस मनाया जाता है।

सिदो मुर्मू और कान्हू मुर्मू

1855 में संथाल भाइयों- सिदो मुर्मू और कान्हू मुर्मू के नेतृत्व में लोग भगनाडीही गाँव में एकत्रित हुए और खुद को औपनिवेशिक शासन से मुक्त घोषित कर दिया। शुरुआत ही में क्षेत्र में ब्रिटिश शासन पंगु हो गया था और देसी एजेंट मारे गए थे।

बाधाओं को तोड़ती

भारतीय खेल प्रतिभा

खेल महाशक्ति के रूप में भारत का परिवर्तन उल्लेखनीय रहा है। भारत में खेल प्रतिभा की कोई कमी नहीं है और यह ओलम्पिक, एशियाई खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों सहित दुनिया भर में विभिन्न चैम्पियनशिप और प्रतिष्ठित खेल आयोजनों में भारतीय खिलाड़ियों द्वारा जीते गए पदकों की बढ़ती संख्या से देखा जा सकता है। भारत में बढ़ती खेल प्रतिभा भारतीय खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत, समर्पण और अपार क्षमता का प्रमाण है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार द्वारा खेलो इंडिया और टारगेट ओलम्पिक पोडियम योजना (TOPS) की शुरुआत के साथ भारतीय खिलाड़ियों को सीखने, बढ़ने और अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए साधन और मंच मिल गया है।

इसके अलावा हाल के वर्षों में भारत में पैरा स्पोर्ट्स का विकास प्रेरणास्पद रहा है। पैरालम्पिक, पैरा एशियन गेम्स और डैफ्लम्पिक जैसे वैश्विक आयोजनों में भारतीय पैरा एथलीट्स की सफलता न केवल उनकी अविश्वसनीय प्रतिभा को दर्शाती है, बल्कि खेल के क्षेत्र में समावेशिता और समान अवसरों के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को भी प्रदर्शित करती है। हाल के पैरा एशियाई खेलों में भारतीय पैरा-एथलीट्स ने 29 स्वर्ण पदक सहित 111 पदकों के साथ अब तक के अधिकतम पदकों का इतिहास रचा है। भारत समग्र पदक तालिका में 5वें स्थान पर था, जहाँ महिला एथलीट्स ने कुल संख्या में 36 प्रतिशत का योगदान दिया।

> "मेरे प्यारे देशवासियो, त्योहारों के इस मौसम में, इस समय देश में स्पोर्ट्स का भी परचम लहरा रहा है। पैरा एशियाई खेलों में भारत ने 111 मेडल जीतकर एक नया इतिहास रच दिया है।"
>
> – प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
> ('मन की बात' सम्बोधन में)

शीतल देवी - धनुष पकड़ने के लिए हाथ से ज़्यादा निश्चय ज़रूरी

27 अक्तूबर, 2023 को 16 वर्षीय तीरंदाज़ शीतल देवी एशियाई पैरा खेलों के एक ही संस्करण में दो स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। उन्होंने चीन के हांगझू में महिलाओं की व्यक्तिगत कम्पाउंड स्पर्धा में सर्वोच्च सम्मान हासिल किया।

जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ की रहने वाली शीतल अपने पैर से धनुष को सही स्थिति में रखती हैं। तीरंदाज़ी में उनकी प्रतिभा किश्तवाड़ में एक भारतीय सेना शिविर में पता चली, जिसके बाद उन्होंने कठोर प्रशिक्षण की ओर रुख किया। अपनी जीत के साथ शीतल पैरा वर्ल्ड तीरंदाज़ी पदक जीतने वाली पहली बिना हाथ वाली महिला बन गईं।

घर लौटने के बाद उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा, "तीन पदक जीतकर मुझे बहुत अच्छा महसूस हुआ। जब मैंने तीरंदाज़ी शुरू की, तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं यह कर पाऊँगी...आज मैं अपने देश के लिए तीन पदक जीत पाई हूँ।"

प्रधानमंत्री ने शीतल देवी को बधाई दी। उन्होंने ट्विटर पर लिखा, "एशियाई पैरा गेम्स में तीरंदाज़ी महिला व्यक्तिगत कम्पाउंड ओपन इवेंट में असाधारण स्वर्ण पदक जीतने वाली शीतल देवी पर गर्व है। यह उपलब्धि उनके धैर्य और दृढ़ संकल्प का प्रमाण है।"

विशेष ओलम्पिक विश्व खेल 2023

विश्व के सबसे बड़े समावेशी खेलों का आयोजन

> **स्पेशल ओलम्पिक्स वर्ल्ड समर गेम्स हमारे इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटीज़ वाले एथलीटों की अद्भुत क्षमता को सामने लाते हैं। इस प्रतियोगिता में भारतीय दल ने 75 गोल्ड मेडल सहित 200 पदक जीते। मुझे विश्वास है कि इन खेलों में भारतीय खिलाड़ियों की सफलता इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटीज़ का मुकाबला कर रहे अन्य बच्चों और परिवारों को भी प्रेरित करेगी।**
>
> — प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
> ('मन की बात' सम्बोधन में)

वास्तव में एक समावेशी समाज वही होता है, जिसमें हर व्यक्ति स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और गरिमापूर्ण जीवन जीते हुए राष्ट्र के समग्र विकास में योगदान देता है। समावेश और समुदाय की एक नई दुनिया गढ़ने के लिए विशेष ओलिम्पिक की स्थापना एक वैश्विक आन्दोलन के रूप में की गई, जहाँ क्षमता या दिव्यांगता की परवाह किए बिना हर कोई स्वीकार्य है, उसका स्वागत है। ग्रीष्मकालीन ओलिम्पिक विश्व खेल और शीतकालीन ओलिम्पिक खेल बारी-बारी से हर दूसरे वर्ष आयोजित किए जाते हैं और इस वर्ष ये बर्लिन, जर्मनी में आयोजित किए गए थे।

इतिहास

1968 के ग्रीष्मकाल में इंटेलेक्चुअल डिसेबल्ड युवाओं के लिए शिकागो में पहले अंतरराष्ट्रीय विशेष ओलिम्पिक खेलों का आयोजन किया गया था, जिसकी स्थापना यूनिस कैनेडी श्राइवर (अमरीकी राष्ट्रपति जॉन एफ़ कैनेडी की बहन) ने की थी। इसका उद्देश्य इंटेलेक्चुअल डिसेबल्ड व्यक्तियों की अन्य क्षमताओं को सामने लाना था।

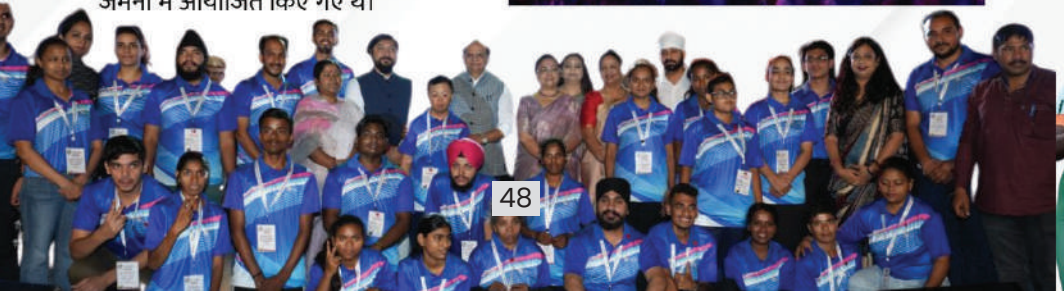

विज़न

विशेष ओलम्पिक, हर किसी को स्वीकारने और समावेश को बढ़ावा देकर एक बेहतर दुनिया बनाने का प्रयास है। खेल, इंटेलेक्चुअल डिसेबल्ड लोगों को नई ताक़त और कौशल खोज कर जीतने का हौसला देते हैं। इन खेलों के माध्यम से खिलाड़ी मैदान और जीवन, दोनों में खुशी, आत्मविश्वास और पूर्णता का अहसास करते हैं। विशेष ओलिम्पिक खेल अपने समुदाय के लोगों को मानव प्रतिभा और क्षमता की विशाल दुनिया में अपना दिल खोल देने को प्रेरित करते हैं।

अपने वर्षपर्यंत खेल, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामुदायिक निर्माण के साथ विशेष ओलिम्पिक विश्व खेल 193 देशों में इंटेलेक्चुअल डिसेबल्ड लोगों का जीवन बदलने का प्रयास करते हैं और 55 लाख से अधिक खिलाड़ियों को असहिष्णुता, अन्याय, निष्क्रियता और सामाजिक अलगाव जैसी आए दिन की मुश्किलों का सामना करने के लिए लड़ने में मदद का अवसर प्रदान करते हैं।

मिशन

विशेष ओलम्पिक का मिशन है इंटेलेक्चुअल डिसेबल्ड बच्चों और युवाओं को ओलम्पिक जैसे विभिन्न खेलों में वर्षपर्यंत प्रशिक्षण देना। यही नहीं, विशेष ओलम्पिक प्रतिभागियों को शारीरिक फ़िटनेस, साहस, आनन्दपूर्ण अनुभव और उपहार, प्रवीणता तथा परिवारों के साथ दोस्ती, विशेष ओलम्पिक के अन्य खिलाड़ियों और समुदाय के साथ आदान-प्रदान के निरन्तर अवसर उपलब्ध कराता है।

इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी क्या है ?

इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी वह शब्द है, जिसका उपयोग ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है, जिसकी ज्ञानात्मक कामकाज और कौशल की कुछ सीमाएँ होती हैं, जिनमें वैचारिक, सामाजिक और व्यावहारिक कौशल, जैसे भाषा, सामाजिकता और अपनी देखभाल शामिल हैं। इसमें बौद्धिक कामकाज (तर्क करना, सीखना, समस्या सुलझाना) और अनुकूल व्यवहार (सामाजिक और व्यावहारिक कौशल) दोनों काफ़ी हद तक सीमित होते हैं। कुछ विशिष्ट सीखने में अक्षमता (ASL) और ऑटिज़्म स्पैक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) भी इसमें शामिल हैं।

इंटेलेक्चुअल एवं डेवलपमेंटल डिसेबल्ड व्यक्ति अपने जीवन में कई प्रकार की समस्याएँ झेलते हैं। इंटेलेक्चुअल एवं डेवलपमेंटल डिसेबिलिटी एक अवस्था है, लेकिन उचित थैरिपी और प्रशिक्षण से यह बेहतर हो सकती है।

विशेष ओलम्पिक विश्व खेल बर्लिन 2023 के विजेता

इंदु प्रकाश

20 वर्षीय इंदु प्रकाश काम-काज निपटाने और अपने माता-पिता की हरसम्भव मदद करने के लिए हमेशा साइकिल चलाते हैं। जहाँ उनकी माँ कड़ी मेहनत करके रोज़ाना चार से पाँच सौ इडली बनाती हैं, वहीं उनके पिता झारखंड के राँची में रेलवे ट्रैक रखरखाव के प्रभारी के रूप में काम करते हैं। इंदु प्रकाश इंटेलेक्चुअली डिसेबल्ड हैं, उनके लिए बोलना चुनौतीपूर्ण है। वह विश्व खेलों को सकारात्मकता और परिवर्तन की दुनिया में प्रवेश के रूप में देखते हैं। प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में इंदु प्रकाश का ज़िक्र किए जाने से उनका परिवार बेहद खुश है। उनके पिता ने कहा, "हमारे बेटे ने बर्लिन में आयोजित ग्रीष्मकालीन खेलों में साइक्लिंग में दो पदक जीते हैं— एक स्वर्ण और एक रजत। यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि हमारे प्रधानमंत्री ने 29 अक्तूबर को प्रसारित 106वें 'मन की बात' में हमारे बेटे की प्रशंसा की है।"

रणवीर सैनी

दो साल की उम्र में ऑटिज़्म से पीड़ित रणवीर सैनी ने इस साल बर्लिन में आयोजित विशेष ओलम्पिक विश्व खेलों में गोल्फ में स्वर्ण पदक जीता। 2015 में उन्होंने स्पेशल ओलम्पिक वर्ल्ड गेम्स लॉस एंजिल्स 2015 में गोल्फ में भारत के लिए पहला स्वर्ण जीतकर इतिहास रचा। रणवीर स्पेशल ओलम्पिक एशिया पैसिफिक गोल्फ मास्टर्स में चार स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ता भी हैं। 'मन की बात' में ज़िक्र होने पर रणवीर कहते हैं, "29 अक्तूबर को हमारे प्रधानमंत्री ने स्पेशल ओलम्पिक के बारे में बात की थी। उन्होंने मेरे और गोल्फ की मेरी यात्रा और डिसेबिलिटी ऑटिज़्म से मेरी लड़ाई के बारे में भी बात की। मैं बहुत खुश था और मेरी माँ खुशी के आँसू रो पड़ीं। हम सबने 'मन की बात' को सेलिब्रेट किया। धन्यवाद मोदी अंकल, धन्यवाद भारत।"

टी. विशाल

विशाल को उसके माता-पिता ने पाठ्येतर गतिविधियों और खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया था, लेकिन पैरालम्पिक खेलों को देखने के बाद ही उसने इनमें से किसी एक को चुना। जिन एथलीटों को उन्होंने प्रतिस्पर्धा करते देखा, उनसे प्रेरित होकर उन्होंने अपने माता-पिता से एक कोच ढूँढने के लिए कहा, जो उन्हें खेलना सिखा सके। वह जल्द ही खेल के प्रति जुनूनी हो गया और यहाँ तक कि उसने इंटरनेट पर ऐसे वीडियो ढूँढे, जो उसे बेहतर बनाने में मदद कर सकें। विशाल का समर्पण रंग लाया और उन्होंने बर्लिन में स्पेशल ओलम्पिक वर्ल्ड गेम्स में पावर लिफ्टिंग में चार रजत पदक जीते। उनकी जीत खेलों में भारत की पहली पोडियम फिनिश थी। विशाल ने आभार व्यक्त करते हुए कहा, " 'मन की बात' में मेरा नाम लेने के लिए पीएम सर को धन्यवाद।"

अनुराग प्रसाद

पावरलिफ्टर अनुराग प्रसाद ने बर्लिन में स्पेशल ओलम्पिक वर्ल्ड गेम्स में तीन स्वर्ण और एक रजत जीता। बौद्धिक रूप से अक्षम होने के कारण, अनुराग को कुछ साल पहले तक खुद को चोट पहुँचाने का खतरा था, हालाँकि पावर लिफ्टिंग से परिचित होने के बाद ये प्रवृत्तियाँ अतीत की बात हो गई हैं। बर्लिन रवाना होने से पहले अनुराग ने स्वर्ण पदक जीतने की ठान ली थी और उनका परिवार खुश है कि वह अपना सपना पूरा कर पाए। प्रधानमंत्री की 'मन की बात' में अनुराग का नाम सुनकर पूरे परिवार में खुशी की लहर है। उन्होंने इसके लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया और कहा, "मैं अपने खेल में और आगे बढ़ूँगा और देश का नाम रोशन करता रहूँगा।"

कूड़े का ख़ज़ाने में परिवर्तन

106वें 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने देश भर में 'वेस्ट टू वेल्थ' अभियान के प्रेरक उदाहरण दिए। उन्होंने नागरिकों और संगठनों के प्रयासों की सराहना की, जिन्होंने कचरे को एक मूल्यवान संसाधन में बदल दिया है, जो देश भर में चल रही नवाचार और सस्टेनेबिलिटी की भावना को उजागर करता है।

परिवर्तन का प्रतीक स्क्रैप प्रतिमाएँ

गुजरात में स्थित अम्बाजी मंदिर एक पवित्र तीर्थ स्थल और एक प्रतिष्ठित शक्ति पीठ है, जहाँ भारत और दुनिया भर से भक्त माँ अम्बे का आशीर्वाद लेने आते हैं। जैसे ही तीर्थयात्री गब्बर पर्वत की ओर बढ़ते हैं, एक अद्भुत दृश्य उनका इंतज़ार करता है। विभिन्न योग मुद्राओं और आसन की प्रतिमाएँ रास्ते की शोभा बढ़ाती हैं। जो बात इन प्रतिमाओं को वास्तव में विशेष बनाती है, वह यह है कि इन्हें स्क्रैप से तैयार किया गया है। खराब वस्तुओं को कला की विस्मयकारी कृतियों के रूप में एक नया जीवन दिया। इन रीसाइकिल्ड प्रतिमाओं ने न केवल आगन्तुकों के आध्यात्मिक अनुभव को बढ़ाया है, बल्कि परिवर्तन और नवीनता की शक्ति के प्रमाण के रूप में भी काम किया है।

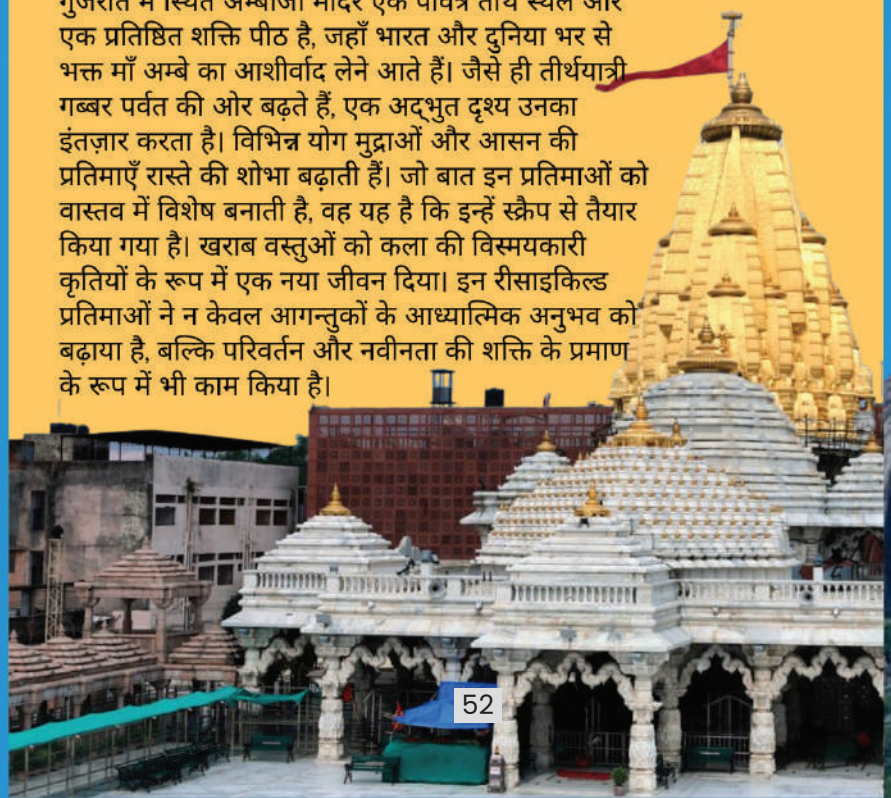

इस बारे में अधिक जानने के लिए दूरदर्शन टीम ने **बनासकाँठा ज़िला मजिस्ट्रेट और अम्बाजी मंदिर के अध्यक्ष, वरुणकुमार बरनवाल** से बात की।

“प्रधानमंत्री जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब से ही उनकी बनासकाँठा ज़िले में स्थित अम्बाजी मंदिर में बहुत ज़्यादा आस्था है और उन्हीं की प्रेरणा से मंदिर में स्क्रैप से बनी हुई योग मुद्राओं की प्रतिमाएँ स्थापित करने का विचार आया था। गुजरात सरकार ने और मंदिर के ट्रस्ट द्वारा अम्बाजी में जो 51 शक्ति पीठ परिक्रमा का पथ बना हुआ है, वहाँ पर सात अलग-अलग लोकेशंस पर इन प्रतिमाओं को लगाया गया है। रात में इसका दृश्य और अच्छा बने, इसलिए परमानेंट लाइटिंग की भी व्यवस्था की गई है। इन सारी प्रतिमाओं को अलग-अलग इंडस्ट्रीज़ के मेटल वेस्ट से बनाया गया है और 'वेस्ट टू वेल्थ' का यह एक बहुत अच्छा उदाहरण है। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री जी ने इस पहल का ज़िक्र किया, उससे इस दिशा में हम सबका काम करने का उत्साह और बढ़ा है। जब से प्रधानमंत्री जी ने इसका उल्लेख किया है, तब से प्रतिमाओं को देखने के लिए और अधिक संख्या में लोग आ रहे हैं और मुझे विश्वास है कि इस पहल का प्रभाव कई सालों तक अम्बाजी मंदिर, आस-पास के इलाके में और पूरे ज़िले में रहेगा।”

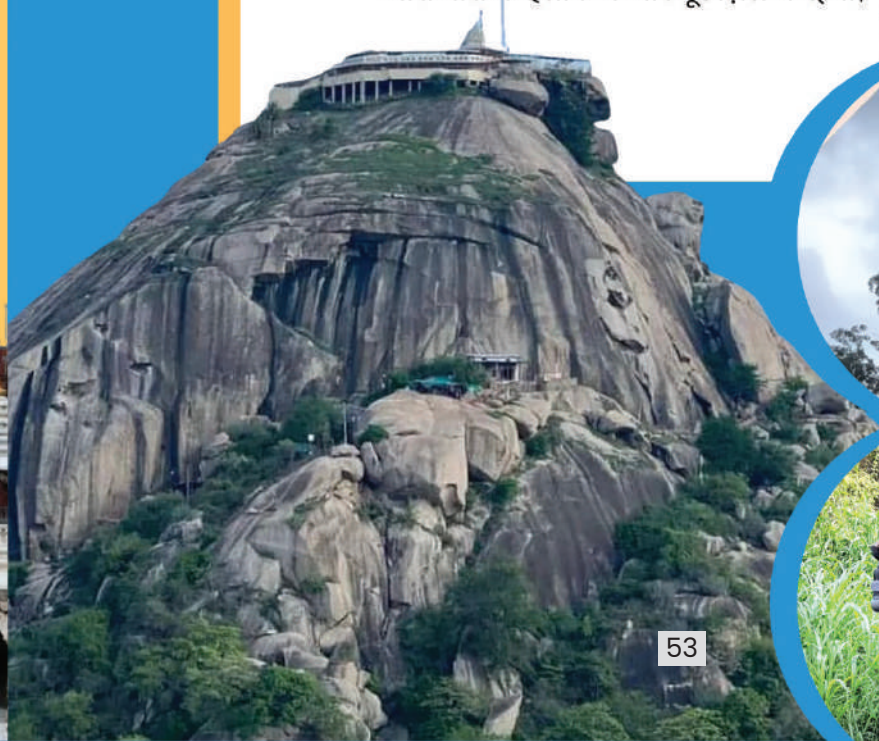

AKSHAR

फ़ोरम का सतत शिक्षा मॉडल

असम के कामरूप मेट्रोपॉलिटन ज़िले में स्थित अक्षर फ़ोरम अपने छात्रों में पर्यावरणीय चेतना और सस्टेनेबिलिटी के मूल्यों को स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। यहाँ छात्र सक्रिय रूप से वृक्षारोपण और खाद्य उत्पादन में संलग्न हैं और सबसे दिलचस्प बात यह है कि वे घरेलू प्लास्टिक कचरे से अपने स्कूल की फ़ीस का भुगतान करते हैं। परमिता सरमा और माज़िन मुख़्तार द्वारा 2016 में शुरू किया गया यह स्कूल छात्रों को प्लास्टिक कचरे को पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों (जैसे ईको- फ्रेंडली ईंटें, गमले, डॉग बाउल्स, आभूषण) में रीपर्पस और रीसाइकिल करने और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने पर विशेष ज़ोर देता है, जो छात्रों में उद्यमशीलता, कौशल और रीसाइक्लिंग प्रक्रियाओं के ज्ञान को बढ़ावा देता है। 106वें 'मन की बात' एपिसोड में प्रधानमंत्री द्वारा मान्यताप्राप्त इस अभिनव पहल का उद्देश्य असम के अन्य स्कूलों में अपने आत्मनिर्भरता और सस्टेनेबिलिटी मॉडल का विस्तार करना है।

यह बेंच ईको-ईंटों का उपयोग करके बनाई गई है

"हमने देखा कि छात्र आजीविका कमाने के लिए स्कूल छोड़ रहे हैं। इसलिए हमने मेटा-टीचिंग शुरू की, जहाँ हम वरिष्ठ छात्रों को अपने कनिष्ठों को पढ़ाने के लिए भुगतान करते हैं, जिससे उनका वित्तीय बोझ कम होता है। हम छात्रों का समूह उनकी उम्र के आधार पर नहीं, बल्कि उनके कौशल के आधार पर बनाते हैं। NEP के अंतर्गत हर सरकारी स्कूल में कक्षा 6 के बाद वोकेशनल ट्रेनिंग अनिवार्य है। इससे पहले ऐसी किसी नीति के अभाव में स्कूल वोकेशनल ट्रेनिंग के लिए इच्छुक नहीं थे, पर अब वे भी चाहते हैं कि हम उनके स्कूलों में NEP मॉडल इम्प्लीमेंट करें या इसे इम्प्लीमेंट करने में उनकी सहायता करें।

अभी हम लोग 18 सरकारी स्कूलों के साथ काम कर रहे हैं और अध्यापकों की प्रतिक्रिया सकारात्मक रही है। हर बच्चे का अपना एक हुनर होता है और हम ये चाहेंगे कि वोकेशनल ट्रेनिंग के अंतर्गत उस हुनर को पहचान मिले और उसे बढ़ावा मिल सके। इस पॉलिसी को लागू करने के लिए प्रधानमंत्री का मैं धन्यवाद करना चाहती हूँ और हम सम्मानित महसूस कर रहे हैं कि उन्होंने 'मन की बात' में हमारे स्कूल का ज़िक्र किया। इससे हमारा काम भी आगे आसान हो जाएगा।"

परमिता सरमा, सह-संस्थापक/एसोसिएट निदेशक, अक्षर फ़ाउंडेशन

"हमने बच्चों के सतत् विकास के लिए एक स्कूल बनाया है। शिक्षा का पारम्परिक भारतीय मॉडल बच्चे के समग्र विकास पर केंद्रित है। बच्चों को मात्र ज्ञान से परिपूर्ण न करके उन्हें समाज में बदलाव के प्रतिनिधि के रूप में जाना जाता है। हम असम के 100 सरकारी स्कूलों में अपने मॉडल को लागू करने के लिए काम कर रहे हैं, जिसमें प्लास्टिक स्कूल फ़ीस की हमारी नीति भी शामिल है। हम निजी स्कूलों में भी प्लास्टिक संग्रहण गतिविधियाँ शुरू कर रहे हैं। छात्र हर हफ्ते घरेलू प्लास्टिक जमा करते हैं, जिनकी छात्रों द्वारा स्वयं नए उत्पादों में रीसाइक्लिंग की जाती है। हम रोमांचित और उत्साहित हैं कि हमारे काम ने प्रधानमंत्री का ध्यान आकर्षित किया है और उन्होंने 'मन की बात' में हमारा उल्लेख किया। हमने समग्र शिक्षा और स्वच्छ भारत अभियान के साथ MoU साइन किया है और इसलिए सरकार इस मॉडल के विस्तार में हमारी सबसे बड़ी भागीदार बन गई है।

माज़ीन मुख़्तार, सह-संस्थापक/एसोसिएट निदेशक, अक्षर फ़ाउंडेशन"

विविधता में एकता का जश्न

राष्ट्रीय एकता दिवस

RUN FOR UNITY

एक भारत, श्रेष्ठ भारत

सरदार वल्लभभाई पटेल, जिन्हें 'भारत का लौह पुरुष' कहा जाता है, ने देश के पहले उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में कार्य किया। उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि नवगठित भारतीय संघ में रियासतों का एकीकरण था, जिसने एकजुट और मज़बूत राष्ट्र बनाने में मदद की। भारत को एकजुट करने के उनके प्रयासों ने उन्हें 'भारत का बिस्मार्क' की उपाधि दी। भारत की एकता और अखंडता में सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान का सम्मान करने के लिए हर साल 31 अक्तूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया जाता है।

इस दिन भारत के विविध समुदायों के बीच एकता, शांति और एकजुटता के मूल्यों को बढ़ावा देने और सुदृढ़ करने के लिए देश भर में विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। यह अखंड भारत के महत्त्व को उजागर करने का भी अवसर है। सबसे प्रमुख कार्यक्रम 'रन फ़ॉर यूनिटी' है, जहाँ पूरे भारत में एकता और विविधता की भावना का प्रतीक दर्शाने के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग दौड़ और मैराथन में भाग लेते हैं।

राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ

"मैं सत्यनिष्ठा से शपथ लेता हूँ कि मैं राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करूँगा और अपने देशवासियों के बीच यह सन्देश फैलाने का भी भरसक प्रयत्न करूँगा। मैं यह शपथ अपने देश की एकता की भावना से ले रहा हूँ, जिसे सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता एवं कार्यों द्वारा सम्भव बनाया जा सका। मैं अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान करने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प करता हूँ।"

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Dr. S. Jaishankar
@DrSJaishankar

An informative and interesting #MannKiBaat today.

Delighted to see noted Tamil author Sivasankari ji and her work being recognized. Had the pleasure of meeting her earlier this month.

> **PMO India** @PMOIndia · Oct 29
> An inspiring endeavour related to the glorious heritage of Tamil Nadu.
> #MannKiBaat

2:20 PM · Oct 29, 2023 · **61.5K** Views

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

We wholeheartedly support the MYBharat initiative mentioned by Hon PM Shri @narendramodi Ji in today's #MannKiBaat.

Empowering the youth to actively participate in nation-building is crucial for a developed Bharat.

@PMOIndia

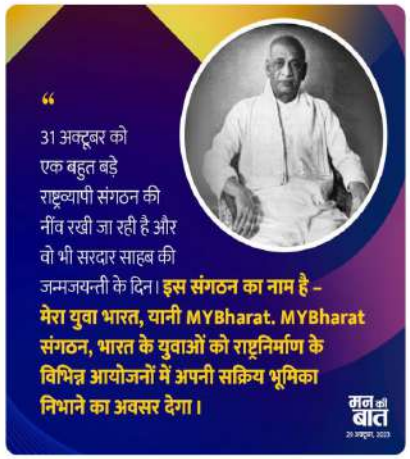

11:28 AM · Oct 29, 2023 · **7,032** Views

Special Olympics Bharat
@SOlympicsBharat

PM Narendra Modi Ji's 'Mann Ki Baat' was filled with pride & joy as he celebrated the exceptional performance of our Special Athletes at the World Summer Games in Berlin! 🇮🇳⭐

Their dedication & determination have shone brightly on the world stage, making us all proud✨

Piyush Goyal
@PiyushGoyal

Made In India उत्पाद और कारीगर के साथ Selfie को NamoApp पर PM @NarendraModi जी के साथ साझा करें...

#MannKiBaat

11:47 AM · Oct 29, 2023 · **24.6K** Views

Office of Mr. Anurag Thakur
@Anurag_Office

India has created a history by winning 111 medals in the Para Asian Games. Our country has excelled in Special Olympics World Summer Games as well.

#MannKiBaat

12:12 PM · Oct 29, 2023 · **324** Views

K.Annamalai
@annamalai_k

Our Hon PM Thiru @narendramodi avl stressed the importance of Vocal for Local for the coming festive season. Hon PM appealed to buy from local vendors, thereby lighting diyas in their lives.

Our Hon PM also reiterated the power of Vocal for Local by stating that Khadi sales in 10 years grew from less than ₹30,000 Crore to around ₹1.25 lakh crore. (2/5)

2:51 PM · Oct 29, 2023 · **4,124** Views

ranveersaini_golfer

77 likes

ranveersaini_golfer It was my greatest honor to be mentioned by our honorable Prime Minister today in his #mannkibaat
Jai Hind🇮🇳

Ranoj Pegu
@ranojpeguassam

Guwahati's @AksharForum has been doing pioneering work in ensuring holistic education that gives precedence to environmental responsibility. Their waste to wealth model is inspirational and should be replicated.

Glad to see their story and work feature in Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji's #MannKiBaat today.

Last edited 1:35 PM · Oct 29, 2023 · **2,271** Views

Harsh Sanghavi
@sanghaviharsh

Creating Asana statues from waste materials at the Gabbar Parvat route is a wonderful way to not only highlight Ambaji but also to demonstrate artistic ingenuity. I express my gratitude to Prime Minister Shri @narendramodi ji for his constant encouragement and assistance, which has contributed to the prosperity and visibility of Gujarat.

12:49 PM · Oct 29, 2023 · **4,371** Views

Ambaji temple official, Gujarat, India
@TempleAmbaji

Hon. Prime Minister shri @narendramodi highlighting statues made out of Waste at Gabbar, Ambaji.

@PMOIndia @yatradhamboard @GujaratTourism @CollectorBK #PMO #MannKiBaat #Ambaji #Gabbar #Gujarat #Ambajitemple #Bestoutofwaste

4:48 PM · Oct 29, 2023 · **8,704** Views

Hardeep Singh Puri
@HardeepSPuri

In a shining example of #WasteToWealth, sculptures of various Yoga postures & Asanas adorn the way to Gabbar Parvat at Amba Ji Temple. PM @narendramodi Ji's visionary suggestion to invite artistes to compete for more such ideas will further boost #SwachhBharat

#MannKiBaat

12:17 pm · 29 Oct 2023 · **7,098** Views

Dr Jitendra Singh
@DrJitendraSingh

"साथियो, आज मैं अपना एक और आग्रह आपके सामने दोहराना चाहता हूँ और बहुत ही आग्रहपूर्वक दोहराना चाहता हूँ।

जब भी आप पर्यटन पर जाएं,तीर्थाटन पर जाएं,तो वहां के स्थानीय कलाकारों के द्वारा बनाए गए उत्पादों को जरूर खरीदें।"

- पीएम श्री @narendramodi.

#MannKiBaat #Vocal4Local

Translate post

11:07 AM · Oct 29, 2023 · **1,466** Views

Yogi Adityanath
@myogiadityanath

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी द्वारा आज @mannkibaat कार्यक्रम में 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' से जुड़ने, अपने घर की भांति अपने मोहल्ले को भी स्वच्छ रखने तथा स्थानीय उत्पादों को खरीदने का आह्वान विकसित भारत के संकल्प के प्रति आमजन के जुड़ाव को बढ़ाने वाला है।

आइए, लोकल के लिए वोकल होकर, स्वच्छता संस्कार को आत्मसात कर लोक-चेतना, लोक-कला, लोक-संस्कृति और लोकतंत्र को मजबूत करने में सहभागी बनें।

Translate post

2:24 PM · Oct 29, 2023 · **77.0K** Views

Nirmala Sitharaman @nsitharaman

நம் பிரதமர் @narendramodi அவர்கள், இன்று #MannKiBaat ல் பேசுகையில் எழுத்தாளர் சிவசங்கரி அவர்களின் பாரத மொழிகள் பற்றிய அவரின் ஆராய்ச்சியைப் பற்றியும், எழுத்தாளர் திரு A K பெருமாள் அவர்களின் story-telling tradition பற்றிய புத்தகங்களைப்பற்றியும் புகழ்ந்து பேசினார்.

> **Narendra Modi** @narendramodi · Oct 29
> Two inspiring efforts from Tamil Nadu which further the spirit of 'Ek Bharat Shreshtha Bharat' and deepen connect with our culture. #MannKiBaat

9:54 PM · Oct 29, 2023 · 34.2K Views

Dr Tamilisai Soundararajan @DrTamilisaiGuv

Thank you honb @PMOIndia Shri @narendramodi ji for quoting popular Tamil literary writers& icons Smt Siva shankari Chennai,Shri Perumal from Kanyakumari Dt TN in today's #MannKiBaat. Your appreciation of eligible Tamil scholars is a well deserved honour for their lifetime literary work. Both have carved a niche for themselves in Tamil literary world in the last 4 decades.

PMO India and 5 others

1:39 pm · 29 Oct 2023 · 3,634 Views

Smriti Z Irani @smritiirani

संगीत, भक्ति, अध्यात्म और गुरु-शिष्य परंपरा की प्रतिमूर्ति संत मीराबाई जी को उनकी 525वीं जयंती पर शत्-शत् नमन।

मीराबाई जी का जीवन देश की नारीशक्ति के लिए प्रेरणापुंज है। #MannKiBaat

Translate post

9:34 pm · 29 Oct 2023 · 32.5K Views

Ajay Sancheti @sancheti_ajay

सरदार वल्लभभाई पटेल जी की जयंती के अवसर पर 'मेरा युवा भारत' इस राष्ट्रीय संगठन की नींव रखी जाएगी। यह संगठन, भारत के युवाओं को राष्ट्रनिर्माण के विभिन्न आयोजनों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देगा।

#MannKiBaat #MyBharat #MeraYuvaBharat

@narendramodi @BJP4India

Translate post

1:51 PM · Oct 29, 2023 · 115 Views

Indian Diplomacy @IndianDiplomacy

Scripting history through record-breaking performances!

In his #MannKiBaat address, PM @narendramodi highlighted the vigour and enthusiasm showcased by the athletes of #BemisaalBharat at the Para Asian Games and the Special Olympics World Summer Games.

Kudos to the winners for their dedication and spirit!

Pralhad Joshi @JoshiPralhad

Hon'ble PM Sri @narendramodi ji's bid to unite the nation through #MannKiBaat continues and today was the 106th address which focused on continued support to #MakeInIndia in our journey to #AtmanirbharBharat. He also dwelled upon the unparalleled growth of the Khadi industry and urged the citizens be #VocalforLocal this Diwali. He also spoke of new initiative Mere Yuva Bharat which aims to harness India's Youth Power through various nation-building activities.

1:17 PM · Oct 29, 2023 · 1,272 Views

MANN KI BAAT

PM says youth website to be launched on Patel birth anniversary, pays tribute to Indira Gandhi

EXPRESS NEWS SERVICE
NEW DELHI, OCTOBER 29

त्योहारों में ऐसे उत्पादों से घर रोशन करें जिनमें हो देशवासियों के पसीने की महक

FESTIVE SEASON

PM Modi reiterates 'vocal for local' pitch

मन की बात

पीएम ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम की 106वीं कड़ी में की दिव्यांग खिलाड़ियों की प्रशंसा

मानसिक दिव्यांग खिलाड़ियों के घर जाकर उत्साहवर्धन करें : मोदी

कल रखी जाएगी 'मेरा युवा भारत' की नींव

भारत को आत्मनिर्भर बनाएं, देश में बना सामान ही खरीदें : मोदी

युवाओं को मेरा युवा भारत के गठन की दी खुशखबरी

भगवान बिरसा मुंडा बसे हैं हमारे हृदय में : मोदी

पटेल की जयंती पर 'मेरा युवा भारत' संगठन की रखी जायेगी नींव : पीएम

मोदी ने सरदार पटेल की जयंती पर 'मेरा युवा भारत' संगठन की नींव रखने की घोषणा की

मन की बात : खादी से जुड़े उत्पादों की बिक्री में हुए इजाफे का जिक्र किया

नरेंद्र मोदी

ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਵਲੋਂ ਦੇਸ਼ ਵਿਆਪੀ 'ਮੇਰਾ ਯੁਵਾ ਭਾਰਤ' ਸੰਗਠਨ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਨ ਦਾ ਐਲਾਨ

• ਤਿਉਹਾਰਾਂ ਮੌਕੇ ਸਥਾਨਕ ਕਾਰੀਗਰਾਂ ਤੋਂ ਉਤਪਾਦ ਖ਼ਰੀਦਣ ਦੀ ਲੋੜ 'ਤੇ ਜ਼ੋਰ • 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' 'ਚ ਕੀਤਾ ਸੰਬੋਧਨ

PM Modi reaches out to tribals in Mann Ki Baat

Hails Banswara Freedom Fighter Govind Guru

TIMES NEWS NETWORK

Prime Minister Narendra Modi

घोषणा | मेरा युवा भारत का गठन: मोदी

31 अक्टूबर को होगा, आजादी का अमृत महोत्सव का समापन

Narendra Modi

PM MODI URGES PEOPLE TO MAKE CONTRIBUTION IN LOCAL ECONOMY

Saptarshi Das

મેક ઈન ઈન્ડિયાને પ્રોત્સાહન આપો : તહેવારોમાં નાના દુકાનદારો પાસેથી જ માલસામગ્રી ખરીદો

દેશવાસીઓનો પરસેવો હોય તેવી વસ્તુઓ ખરીદો : મોદી

ભારત હવે મોટું મેન્યુફેક્ચરિંગ હબ બની રહ્યું છે અને અનેક બ્રાન્ડ ભારતમાં બની રહી છે : PM

મેરા યુવા ભારત સંગઠન

પેરા ગેમ્સના ખેલાડીઓને વધામણી આપી

વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદીએ 'મન કી બાત'માં કહ્યું

ભારત આદિવાસી યોદ્ધાઓનો સમૃદ્ધ ઇતિહાસ ધરાવે છે

અંબાજી માર્ગ પર બનેલી પ્રતિમાઓ વિશે માહિતી આપી

देश अब खेलों में भी परचम लहरा रहा है: मोदी

■ 'मन की बात' में पटेल की जयंती पर 'मेरा युवा भारत' नामक संगठन बनाने का किया ऐलान

राष्ट्र निर्माणासाठी 'मेरा युवा भारत'

मन की बात : 'आत्मनिर्भर भारता'साठी खादीला प्राधान्य द्या

मोदी म्हणाले...

'व्होकल फॉर लोकल'

कर्तव्य पथावर कार्यक्रम

मन की बात में पीएम मोदी ने झारखंड के आदिवासी योद्धाओं का किया जिक्र

யு.பி.ஐ. வசதியை பயன்படுத்தி பணம் செலுத்துங்கள்

உள்ளூர் பொருட்களையே வாங்குங்கள்

'மனதின் குரல்' நிகழ்ச்சியில் பிரதமர் மோடி வேண்டுகோள்

தமிழக எழுத்தாளர்கள் பெருமாள் சிவசங்கரிக்கு பிரதமர் மோடி பாராட்டு

ஏ.கே.பெருமாள்

சிவசங்கரி

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ରେଡ଼ିଓ ଅଭିଭାଷଣ 'ମନ୍ କି ବାତ୍'

యువశక్తిని ఏకం చేసేందుకు

మేరా యువ భారత్

سردار پٹیل کے یوم پیدائش کے موقع پر ملک گیر تنظیم میرا یووا بھارت کی بنیاد رکھی جائے گی: وزیر اعظم مودی

ಸರ್ದಾರ್ ವಲ್ಲಭಭಾಯಿ ಪಟೇಲ್ ಜನ್ಮದಿನದ ಸ್ಮರಣಾರ್ಥ | ಭಾರತದ ಯುವಶಕ್ತಿ ಸಂಯೋಜಿಸುವ ವಿಶೇಷ ಪ್ರಯತ್ನ

ಯುವಕರಿಗಾಗಿ ಮೇರಾ ಯುವ ಭಾರತ ಪ್ರಾರಂಭ ನಾಳೆ

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ମନ୍ କୀ ବାତ୍

୩୧ରେ 'ମେରା ଯୁବା ଭାରତ ସଂଗଠନ' ସ୍ଥାପନ

প্ৰধানমন্ত্ৰী মোডীৰ 'মন কী বাত'

গুৱাহাটীৰ অক্ষৰ ফ'ৰাম স্কুলৰ পৰিৱেশ বান্ধৱ কৰ্মৰাজিক উচ্চ প্ৰশংসা

নতুন দিল্লী, ২৯ অক্টোবৰ ঃ প্ৰধানমন্ত্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোডীৰ মাহেকীয়া 'মন কী বাত'ৰ আজিৰ অনুষ্ঠানত অসমৰ গুৱাহাটীৰ (পামহীস্থিত) 'অক্ষৰ ফ'ৰাম' স্কুলৰ পৰিৱেশ-বান্ধৱ কৰ্মৰাজিক উচ্চ প্ৰশংসা কৰা হয়। ২০১৬ চনত স্থাপিত আৰু প্ৰথম শ্ৰেণীৰ পৰা দ্বাদশ ■ ৮ পৃষ্ঠাত

শিক্ষাৰ্থীয়ে সংগ্ৰহ কৰা পেলনীয়া প্লাষ্টিকেৰে বিদ্যালয়খনে নিৰ্মাণ কৰে ফুলৰ টাব, ডেস্ক-বেঞ্চ, ইটাসহ বিভিন্ন সামগ্ৰী

TOI

'Nationwide platform 'Mera Yuva Bharat' to be launched on Sardar Patel's birth anniversary': PM Modi in Mann ki Baat

NEWS18

PM Modi Bats For Vocal-For-Local This Diwali, Remembers Contribution of Tribal Warriors in Freedom Struggle

Hindustan Times

PM Modi announces launch of nationwide platform 'Mera Yuva Bharat' on 31 October

THE HINDU

Prime Minister Modi appreciates folklorist A.K. Perumal

abp न्यूज़

Mann Ki Baat Live Update: 31 अक्टूबर को रखी जाएगी 'मेरा युवा भारत' संगठन की नींव, देश के कोने-कोने से आई मिट्टी से दिल्ली में बनेगी 'अमृत वाटिका': पीएम मोदी

ZEENEWS हिंदी

Mann Ki Baat: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के 106वें एपिसोड में खादी बिक्री पर चर्चा की

हिन्दुस्तान

सम्मान और समानता भगवान बिरसा मुंडा का मूल मंत्र था: पीएम

R.भारत

कौन हैं तमिल की लेखिका शिवशंकरी? पीएम मोदी ने मन की बात में की तारीफ

जनता से रिश्ता
www.jantaserishta.com

मन की बात में पीएम मोदी ने विशेष ओलंपिक विश्व पदक विजेताओं की सराहना की

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

भारत सरकार